Bhagwati Baglamukhi Sarvajana Vashikaran Mantra
भगवती बगलामुखी सर्वजन वशीकरण मंत्र

Sumit Girdharwal Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org

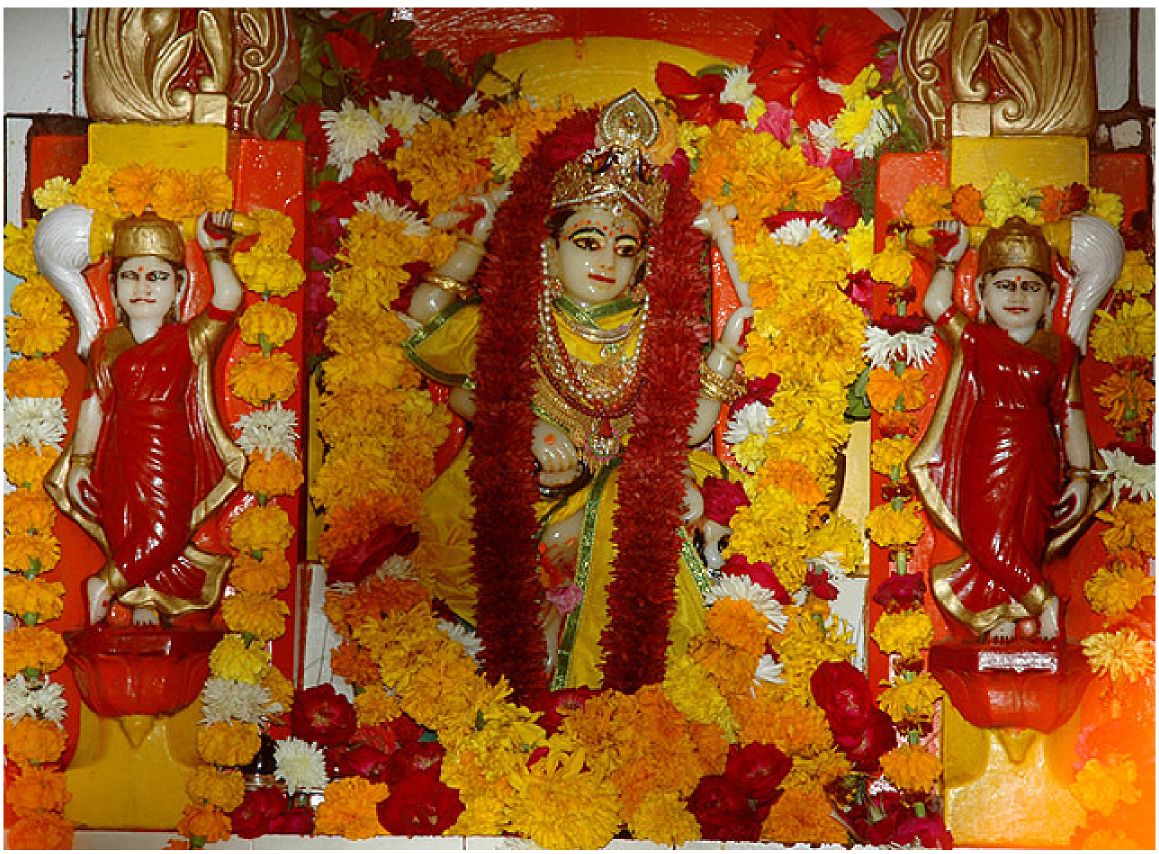

मां बगलामुखी को सामान्यतः सभी लोग शत्रुओं का नाश करने वाली, उनकी गति, मति, बुद्धि का स्तम्भन करने वाली, मुकदमे एवं चुनाव आदि में विजय दिलाने वाली शक्ति के रूप में जानते हैं। लेकिन यह बात केवल कुछ ही लोग जानते हैं कि वे जगत का वशीकरण भी करने वाली हैं। यदि उनकी कृपा प्राप्त हो जाये तो साधक की ओर सभी आकर्षित होने लगते हैं, वह जंहा बोलता है, वंही उसे सुनने को जन समूह उमड़ पड़ता है। उसका दायरा बहुत व्यापक हो जाता है। कोई भी स्त्री, पुरूष, बच्चा उसके आकर्षण में ऐसा बंध जाता है कि अपनी सुध-बुध खो बैठता है और वही करने के लिए विवश हो जाता है, जो साधक चाहता है।

इस साधन को करने के लिए अति गोपनीय मंत्र का उल्लेख मैं यंहा साधकों के लिए कर रहा हूॅ । लेकिन साधक सदैव स्मरण रखें कि ऐसी साधनाओं का दुष्प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए अन्यथा साधक की साधना क्षीण होने लगती है। मंत्र का प्रयोग सदैव समाज कल्याण के लिए करना चाहिए, न कि समाज-विरोधी गतिविधियों के लिए ।

सर्वप्रथम भगवती बगलामुखी की मंत्र दीक्षा ग्रहण करें उसके पश्चात गुरू आज्ञानुसार साधना करें

विनियोगादि करने के उपरान्त भगवती बगलामुखी का ध्यान करें, यथा–

गौरी पीताम्बरधरा पीतस्रगनुलेपना।
रत्नसिंहासनगता रत्नालंकार–भूषिता।।
त्रिनेत्रा चन्द्रशकलविराजित ललाटिका ।
सौन्दर्यसारविजित जगल्लावण्य पुंजिका।।
चतुर्भुजांकुशवरे दक्षिणे बिभ्रति करे ।
तथैव धारयन्ती च वामे दीपाभये करे।।

मंत्रः– ओम् नमो भगवत्यै पीताम्बरायै ह्रीं ह्रीं सुमुखि बगले विश्वमेतं वशं कुरू कुरू स्वाहा ।

Mantra : Om Namo Bhagwatye Pitambaraaye Hreem Hreem Sumukhi Bagle Vishvematam Vasham Kuru Kuru Swaha

सामान्यतः एक लाख की संख्या में जप करने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है, लेकिन यदि प्रयोग सफल न हो तो पुनः एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए ।

....

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को योग्य गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है -
sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

Our Books

1. **Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

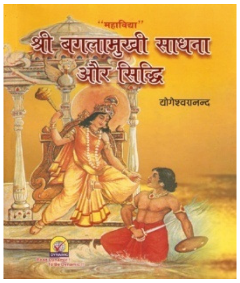

2. **Mantra Sadhana**

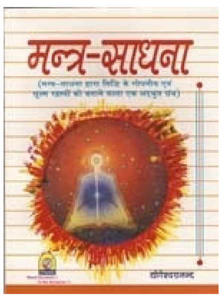

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

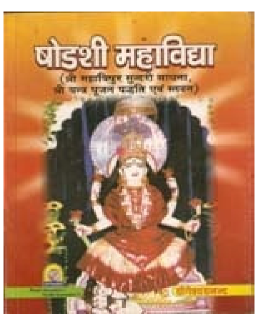

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680/= नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need an English translator who can translate these articles into English
3. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Durga Shabar Mantra

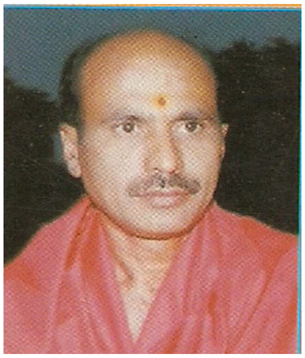

Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

जगदम्बा के दर्शन हेतु चमत्कारी शाबर मंत्र :-

वैदिक धर्म के सभी लोग नवरात्रि में भगवती जगदम्बा की उपासना करते हैं। सामान्यतः सभी लोग जगदम्बा के दर्शनों को लालायित भी रहते हैं , इसी लिए इस श्रंखला में यह मंत्र लिख रहा हूॅं। आप सभी से अनुरोध है कि इस मंत्र का जप नवरात्री में अवश्यक करें। यदि आपको आध्यात्मिक स्तर अच्छा है तो निश्चित रूप से आप भगवती जगदम्बा का दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

किसी भी नवरात्री में प्रतिपदा से नवमी तिथी तक शुद्ध घी का अखण्ड दीपक प्रज्जवलित रखते हुए अगरबत्ती अथवा शुद्ध धूप जलाकर प्रातः और सायं काल में इस मंत्र का चालीस-चालीस की संख्या में जप करें। यह स्मरणीय है कि संख्या कम अथवा अधिक न हो। यदि जगदम्बा रानी की कृपा हुई तो दर्शन अवश्यक होगें ।

यहां यह स्मरण रखें कि इस मंत्र में जो शब्द जैसे लिखा है, उसे उसी प्रकार पढ़ना है, उसमें कोई संशोधन अथवा परिवर्तन नहीं करना है।

मंत्र

डण्ड भुज-डण्ड, प्रचण्ड नो खण्ड। प्रगट देवि! तुहि झुण्डन के झुण्ड। खगर दिखा खप्पर लियां, खड़ी कालका। तागड़दे मस्तंग, तिलक मागरदे् मस्तंग। चोला जरी का, फागड़ दीफू, गले फुल माल, जय जय जयन्त। जय आदि शक्ति। जय कालका खपर-धनी। जय मचकुट छन्दनी देव। जय-जय महिरा, जय मरदिनी। जय-जय चुण्ड-मुण्ड भण्डासुर-खण्डनी, जय रक्त बीज बिडाल-बिहण्डनी। जय निशुम्भ को दलनी, जय शिव राजेश्वरी। अमृत-यज्ञ धागी-धृट, दृवड़ दृवड़नी। बड़ रवि डर-डरनी ओम् ओम् ओम् ।।।

Dand bhuj-dand, prachand no khand. Pragat devi ! tuhi jhundan ke jhund. Khagar dikhaa khappar liyan, khadi kaalakaa. Taagad de mastang, tilak maagar de mastang . Cholaa jari kaa phagad deefu, gale ful maal, jai jai jayant. jai aadi shakti. Jai kaalaka khapar-dhani. Jai machkut chhandani dev. Jai jai mahiraa, jai mardini. jai jai choon moond bhandaasur-khandani, jai rakt beej bidaal-bihandini. jai nishumbh ko dalani, jai shiv raajeshwari. Amrit-yagya dhaagi-dhrat, dravad dravadani. Bad ravi dar-darani Om Om Om.

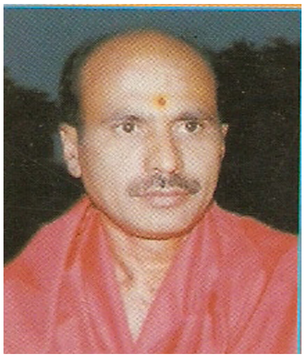

Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919410030994
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

My dear readers! Very soon I am going to start a free of Cost E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare.It will be delivered to you in pdf format to your email id which you can read on any device and you can also take its print. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9540674788

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

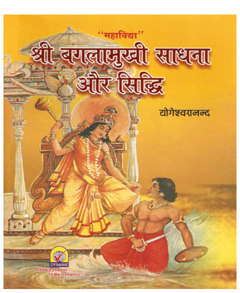

2. Mantra Sadhana

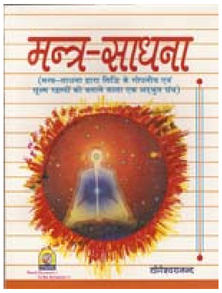

3. Sri Vidya Shodashi Mahavidya **(Tripura Sundari Sadhana Shri Yantra Puja)**

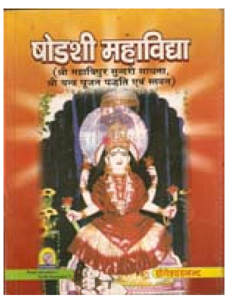

Pushp Kinnari Sadhana

पुष्प किन्नरी साधना

Sumit Girdharwal Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org

प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा होती है कि उसका व्यक्तित्व आकर्षण से भरा हुआ हो; प्रत्येक व्यक्ति उसकी ओर मुड़-मुड़ कर देखे, प्रत्येक व्यक्ति उसकी ओर चुम्बक के समान खिंचा चला आए। वह चाहता है कि उसका प्रभाव ऐसा हो, जो प्रत्येक व्यक्ति को

अपने आकर्षण के बंधन में बांध ले और कोई उससे मुक्त न हो सके।

यदि किसी भी व्यक्ति में ऐसा आकर्षण हो तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह किसी भी क्षेत्र में असफल हो जाए। ऐसे व्यक्ति को हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। ऐसे व्यक्तित्व वाला व्यक्ति जो भी करेगा लोग उसका अनुसरण करेंगें, उसकी प्रत्येक बात पर एक विशेष ध्यान देंगें, उसकी प्रत्येक बात मानने को उत्सुक रहेंगे। ऐसा ही आकर्षण प्रदान करने वाली साधना का उल्लेख मैं यंहा कर रहा हूॅ, जिसका नाम है..........पुष्प किन्नरी साधना ।

इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे अनगिनत प्रकार का जीवन एवं अनेक प्रकार की योनियां विद्यमान है। यद्यपि विज्ञान की दृष्टि में मात्र उन्हीं योनियों पर विश्वास करता है जो पंच तत्वों से निर्मित है अथवा सम्पूर्ण रूप से पदार्थ के रूप में उपलब्ध हैं, परन्तु यह भी एक प्रमाणित तथ्य है कि इस ब्रह्माण्ड में इतर योनियां भी हैं भले ही हम उन पर विश्वास करें या ना करें । लेकिन यह सत्य है कि हम इस सत्य से कदापि भाग नहीं सकते।

इन इतर योनियों में यक्षिणी, यक्ष, अप्सराएं, गन्धर्व, किन्नर एवं किन्नरी आदि योनियां भी होती हैं और वे क्षण प्रतिक्षण ऐसे किसी व्यक्ति की प्रतिक्षा करती रहती है, जो साधना के माध्यम से उनका आवाहन करे और उनके सम्पर्क में निरन्तर बना रहे। यंहा

यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि इन योनियों में कुछ अच्छे गुणों से युक्त होती हैं और कुछ बुरे गुणों से युक्त होती हैं।

यक्ष एवं यक्षिणी व्यक्ति को घर-गृहस्थी का सुख प्रदान करने के साथ-साथ प्रचुर धन-दौलत, समस्त प्रकार की सम्पत्ति देने में भी सक्षम हैं। अप्सराएं भी बहुत ही भव्य, दिव्य और सुन्दर होती हैं जिनकी साधना मां, मित्र, बहन आदि के रूप में की जाती है, जो अपने साधक को उसकी धारणा के अनुसार फल प्रदान करती हैं। ये भी साधक को प्रचुर मात्रा में धन-सम्पति, ऐश्वर्य एवं अपूर्व सौन्दर्य प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम होती है। यदि इन्हें प्रेयसी के रूप में साधक प्राप्त करना चाहता है तो ये उसे शारीरिक सुख भी प्रदान करती हैं, परन्तु साधक को इस स्वरूप में उनकी साधना कदापि नहीं करनी चाहिए।

इन्हीं इतर योनियों में विद्याधर नामक योनि भी है, जो अपने अपूर्व पांडित्य एवं विद्वता में अद्वितीय मानी जाती है। जो भी साधक इनकी साधना सफलता पूर्वक सम्पन्न करता है, उन्हें ये इतर योनियां पांडित्य एंव अतुलनीय विद्वता प्रदान करती हैं। इसी प्रकार अन्य प्रकार की अनेकों योनियां हैं , जिनके सम्बन्ध में यंहा उल्लेख करना शायद अनुपयुक्त ही होगा, क्योंकि यह एक वृहद विषय है।

ऐसी ही इतर योनियों में एक योनि किन्नर के नाम से जानी जाती है जिनकी कन्याएं एंव महिलाएं किन्नरी कही जाती हैं। इस

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

योनि के सम्बन्ध में प्रसिद्व है कि ये कला एंव नृत्य आदि के द्वारा देवताओं का भरपूर मनोरंजन करती हैं। किन्नरों और किन्नरियों को भी विभिन्न सिद्धियां प्राप्त होती हैं जिनके माध्यम से वे अपने साधक की अनेकों कामनाओं की पूर्ति सरलता से कर सकती हैं। यह प्रजाति ऐसी है जिसकी साधना सम्पन्न करने पर साधक को जीवन पर्यन्त अपूर्व बल, आरोग्य, पौरूष की प्राप्ति होती है, उसके शरीर में एक भव्य तेज आने लगता है, सौन्दर्य स्वयं उसे देखकर झेंपने लगता है। साधक के समस्त रोग-ताप दूर भागने लगते हैं। उसका सौन्दर्य दिन-प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होता है।

इस साधना की सबसे विशिष्ट बात यह है कि यह अतिशीघ्र फलदायी , सिद्धि प्रदान करने वाली एवं सरल हैं इसे सम्पन्न करने वाला साधक अथवा साधिका जीवन पर्यन्त जो भी चाहते हैं किन्नरी उन्हें वह सब कुछ प्रदान करती है और उनकी आज्ञा का पालन करती है। उन्हें पूर्णतः सहयोग प्रदान करती हैं। यह साधकों के जीवन में धन प्राप्ति के नये-नये श्रोत बनाती है, जिससे साधको अक्षत धन की प्राप्ति होती है, वे जीवन पर्यन्त सम्पूर्ण ऐश्वर्य भोगते हैं। शारीरिक सुख, अन्न, वस्त्र, मानसिक सन्तुष्टि, स्वर्ण एवं स्थायी सम्पत्ति इन किन्नरियों द्वारा अपने साधको को प्रदान की जाती है। इनकी विशिष्टता एक और है, और वह है अपने साधकों को इनके द्वारा मार्गदर्शन प्रदान करना।

यह समय-समय पर अपने साधकों को एक उत्तम सलाहकार के रूप में सलाह प्रदान करती रहती हैं और कब उसे क्या करना

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

है, यह सब उन्हें समय-समय पर स्पष्ट करती रहती है, जिससे साधक का जीवन अत्यधिक सरल हो जाता है, और वह समस्त कार्य उनकी सलाह के अनुसार करने लगता है और उत्तम फल की प्राप्ति करता है। लेकिन यदि किसी प्रकार की विपत्ति साधक पर आने लगती है तो ये किन्नरियां तन-मन-धन से साधक की सहायता करती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि ये किन्नरियां बहुत ही सौम्य और साधक की आज्ञा का पालन करने वाली होती हैं। ये विभिन्न कलाओं में पारंगत होती हैं। नृत्य में ये श्रेष्ठ मानी जाती हैं और अपने साधक को अपनी नृत्य कला के माध्यम से अत्यन्त ही आनन्द प्रदान करती हैं यदि साधक किसी भी प्रकार की कला के क्षेत्र में होता है तो ये उसे उसकी कला के क्षेत्र में श्रेष्ठतम, लोकप्रिय और अद्वितीय बना देती हैं जिससे साधक अपार यश एवं कीर्ति प्राप्त करता है। उसे बोलने की वह स्थिति प्राप्त हो जाती है, जिसके द्वारा वह किसी को भी सरलता से प्रभावित कर सकता है, अर्थात उसमें अचम्भित करने वाला वाक् चातुर्य आ जाता है।

वास्तविकता यह है कि इस साधना के सम्बन्ध में जितना भी कहा जाए वह कम है। किन्नरी चिरयौवनमयी होती हैं। अतः इनकी साधना समपन्न करने वाले साधक भी जीवन भर यौवन से परिपूर्ण बना रहता है। चूंकि ये किन्नरियां अत्यन्त ही सुंदर, सरल एवं सौम्यता से पूर्ण होती हैं अतः अपने साधक के साथ ये कभी

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

विश्वासघात नहीं करती हैं और इस प्रकार साधक को एक ऐसे मित्र की प्राप्ति हो जाती है, जिस पर आंखे बन्द करके विश्वास कर सकता है। यदि किसी समय साधक स्वयं को तन्हा महसूस करता है या उदास होता है तो किन्नरी हर प्रकार से उसे खुश करने का प्रयास करती है और विभिन्न प्रकार से उसका मनोरंजन करती हैं।

इस प्रकार की साधनाओं के विषय में कहा जाता है कि ये साधनाएं तुच्छ श्रेणी की होती हैं और साधक को विभिन्न प्रकार की हानि पंहुचाती हैं, यह कथन सत्य नहीं है। वास्तविकता यह है कि किन्नरियों के द्वारा अपने साधक को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पंहुचायी जाती बल्कि उन्हें सुख और लाभ प्रदान करती हैं।

सबसे बड़ी बात यह है कि यह साधना साधक का अधिक समय नहीं लेती और शीघ्र ही सिद्ध हो जाती है। साथ ही यह अत्यधिक जटिल भी नहीं होती और इसके विधान भी अत्यन्त ही सरल हैं। किन्नरियां अपने साधक के प्रति पूर्णतः समर्पित होती हैं और साधक के जीवन में प्रेमिका बनी रहती हैं और साधक को जीवन भर सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का भोग कराती हैं। सभी प्रकार के सुख, कीर्ति, ऐश्वर्य साधक के जीवन का एक अनंग अंग बन जाते हैं और उसे जीवन पर्यन्त अनन्त आनन्द की चरम सीमा को प्राप्त करता है।

साधना-सामग्री :

- गुलाबी रंग के पहनने के वस्त्र
- गुलाबी रंग का आसन
- आम की लकडी की चौकी/बाजोट
- चौकी के लिए गुलाबी वस्त्र
- पीले रंग अथवा पिसी हल्दी से रंगे अक्षत
- पुष्प किन्नरी यन्त्र
- केसर, अष्टगंध, अक्षत अथवा पुष्प
- सुगन्धित अगरबत्ती
- शुद्व घी का दीपक
- पुष्प किन्नरी माला
- सुगन्धित पान

साधना-विधान :

दिन : शुक्रवार

समय : रात्रि काल में दस बजे से आरम्भ

किसी भी शुक्ल पक्ष के किसी भी शुक्रवार में इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए। अपने पूजन स्थान को साफ करके आम की लकडी की चौकी बिछाकर उसके ऊपर गुलाबी रंग का नया वस्त्र बिछा दें। उस वस्त्र पर हल्दी से रंगे अक्षतों से अष्टदल कमल का निर्माण करें और उसके मध्य में पुष्पकिन्नरी यंत्र की स्थापना करें। तदोपरान्त अष्टगंध, अक्षत, पुष्पों आदि से यन्त्र का पूजन करें। घी के दीपक की स्थापना करें और दीपक से प्रार्थना करें कि ....

'हे दीप! आप देवी का रूप हैं, आप मेरी इस पूजा कर्म के साक्षी हैं और विघ्नों का नाश करने वाले हैं । अतः जब तक मैं साधना में रत रहूं, तब तक आप स्थिर रहने की कृपा करें ।'

तद्ोपरान्त देवी किन्नरी का ध्यान करें

मन्त्रः ।। ओम् पुष्प किन्नरी वशमानय श्रौं ओम् ।।

ध्यान करने के उपरान्त साधक को पुष्प किन्नरी माला से इक्कीस अथवा इकत्तीस माला उक्त मन्त्र की करनी चाहिए। जप के अन्त में किन्नरी के उपस्थित होने पर पहले से ही रखे सुगन्धित पान में से आधा उसे खिलाएं और आधा स्वयं ग्रहण करें। इसके साथ ही किन्नरी को सात बार वचनबद्व कर लें कि जीवन भर वह आपके आदेश का पालन करेगी और जब भी आप उसे बुलायेगें वह आयेगी और आपका कार्य करेगी तथा जीवन भर वह आपका सहयोग करेगी। इसके उपरान्त जब भी

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

उपरोक्त मन्त्र का जप करके किन्नरी को याद करेंगे तो वह तुरन्त उपस्थित होगी।

साधना के बाद अगले दिन साधना में प्रयोग किये गये यन्त्र और माला को चलते जल में प्रवाहित कर दें।

....

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को योग्य गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है -
sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

Our Books

1. **Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

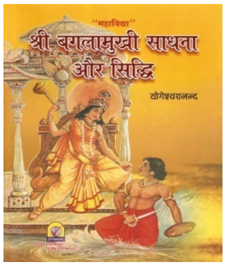

2. **Mantra Sadhana**

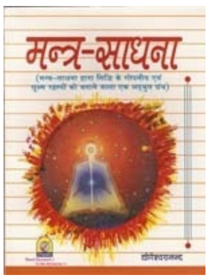

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

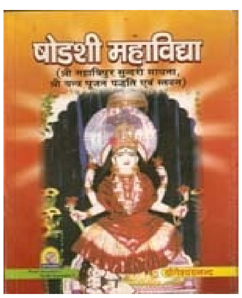

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680/= नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Ma Baglamukhi Bhakt Mandaar Mantra Evam Puja Vidhi

माँ बगलामुखी भक्त मंदार मंत्र एवं पूजा विधि

(उन्नीसाक्षरी मंत्र - धन-समृद्धि प्रदायक विशेष प्रयोग)

Sumit Girdharwal Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org

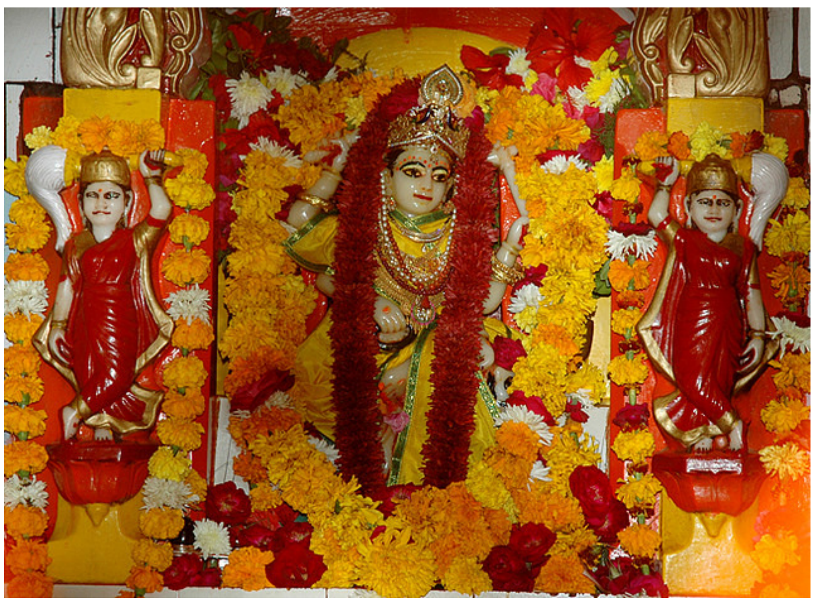

भगवती बगलामुखी की उपासना कलियुग में सभी कष्टों एवं दुखों से मुक्ति प्रदान करने वाली है। संसार में कोई कष्ट अथवा दुख ऐसा नही है जो भगवती पीताम्बरा की सेवा एवं उपासना से दूर ना हो सकता

हो, बस साधकों को चाहिए कि धैर्य पूर्वक प्रतिक्षण भगवती की सेवा करते रहें।

भगवती बगलामुखी का यह भक्त मंदार मंत्र साधकों की हर मनोकामनां पूर्णं करने वाला है। इस मंत्र का विशेष प्रभाव यह है कि इसे करने वाले साधक को कभी भी धन का अभाव नही होता। भगवती की कृपा से वह सभी प्रकार की धन सम्पत्ति का स्वामी बन जाता है। आज के युग में धन के अभाव में व्यक्ति का कोई भी कार्य पूर्ण नही होता। धन का अभाव होने पर ना ही उसका कोई मित्र होता है और ना ही समाज में उसे सम्मान प्राप्त होता है। इस मंत्र के प्रभाव से धीरे-धीरे साधक को अपने सभी कार्यों में सफलता मिलनी प्रारम्भ हो जाती है एवं धन का आगमन होना प्रारम्भ हो जाता है।

ऐसा भी देखने में आता है कि कुछ लोग धन तो बहुत अधिक कमातें हैं लेकिन उनके पास बचता कुछ भी नही है, बिना वजह उनके धन का नाश होता है। ऐसे लोगो की जब हम कुण्डली देखते हैं तो षष्ठ(कर्ज) एवं द्वादश(व्यय) भाव शुभ ग्रहों द्वारा प्रभावित होते हैं अथवा एकादश (लाभ) भाव का स्वामी द्वादश (व्यय) भाव में अथवा द्वादश भाव के स्वामी के प्रभाव में होता है, जिस कारण वो जितना भी धन कमाते हैं उतना ही किसी ना किसी रूप में व्यय हो जाता है।

भगवती पीताम्बरा इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को चलाने वाली शक्ति हैं। नवग्रहों को भगवती के द्वारा ही विभिन्न कार्य सौपे गये हैं जिनका वो

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

पालन करते हैं। नवग्रह स्वयं भगवती की सेवा में सदैव उपस्थित रहते हैं। जब साधक भगवती की उपसना करता है तो उसे नवग्रहों की विशेष कृपा प्राप्त होती है। यदि साधक को उसके कर्मानुसार कहीं पर दण्ड भी मिलना होता है तो वह दण्ड भी भगवती की कृपा से न्यून हो जाता है एवं जगदम्बा अपने प्रिय भक्त को इतना साहस प्रदान करती हैं कि वह दण्ड साधक को प्रभवित नही कर पाता। इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कोई भी इतना शक्तिवान नही है जो जगदम्बा कें भक्तो का एक बाल भी बांका कर सके। कहने का तात्पर्य यह है कि कारण चाहें कुछ भी हो भगवती बगलामुखी की उपासना आपको किसी भी प्रकार की समस्या से मुक्त करा सकती है।

मां की कृपा को वही जान पाया है जो उनकी शरण में गया है, इसीलिए अपने शब्दों को यही पर विराम देते हुए मां भगवती से प्रार्थना करता हूं कि आप सभी को भगवती अपनी शरण प्रदान करें एवं आपका कल्याण करे।

बगलामुखी साधना का परिचय

भगवती की साधना में आगे बढ़ते हुए जब साधक अष्टाक्षरी मंत्र का अनुष्ठान पूर्ण कर लेता है उसके पश्चात उन्नीसाक्षरी मंत्र (भक्त मंदार मंत्र) की दीक्षा साधक को दी जाती है। जो लोग पहली बार

भगवती पीताम्बरा की साधना के बारे में पढ़ रहे हैं उन्हें थोड़ा परिचय दे देता हूं -

भगवती पीताम्बरा की उपासना में क्रम दीक्षा होती है। क्रम दीक्षा का अर्थ है क्रम से भगवती के विभिन्न मंत्रो को गुरूमुख से प्राप्त करना। यह क्रम इस प्रकार है -

एकाक्षरी मंत्र (बीज मंत्र), चतुर्क्षरी मंत्र, अष्ठाक्षरी मंत्र, उन्नीसाक्षरी मंत्र (भक्त मंदार मंत्र), छत्तीसाक्षरी मंत्र(मूल मंत्र) ।

सर्वप्रथम गुरूदेव द्वारा एकाक्षरी मंत्र (बीज मंत्र) साधक को दिया जाता है जिसका सवा लक्ष (1,25,000) जप साधक द्वारा किया जाता है। इसके पश्चात क्रम से चतुर्क्षरी, अष्ठाक्षरी, उन्नीसाक्षरी, छत्तीसाक्षरी मंत्र साधको को दिया जाता है एवं प्रत्येक मंत्र का सवा लक्ष (1,25,000) जप साधक को करना होता है। इस प्रकार सभी मंत्रों का जप हो जाने पर साधक गुरूदेव से पूर्णाभिषेक दीक्षा प्राप्त करता है।

यहां पर मैं भगवती पीताम्बरा के उन्नीसाक्षरी मंत्र का वर्णन कर रहा हूं जिसे भक्त मंदार मंत्र भी कहा जाता है।

भक्त मंदार मंत्र

मंत्र - श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा ।

Shreem Hreem Aym(Aim) Bhagwati Bagle May Shriyam Dehi Dehi Swaha

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

(कृपया दीक्षित साधक ही इसका जप करें। जिनकी दीक्षा नही हुई है वो सबसे पहले दीक्षा ग्रहण करें)

इस मंत्र का जप स्फटिक अथवा कमलगट्टे की माला पर किया जाता है।

भक्त मंदार मंत्र का अनुष्ठान

जब साधक का एकाक्षरी, चतुराक्षरी एवं अष्टाक्षरी मंत्र का अनुष्ठान पूर्ण जो जाये तो उसके बाद गुरूदेव से उन्नीसाक्षरी मंत्र (भक्त मंदार मंत्र) की दीक्षा लेनी चाहिए। अनुष्ठान करने की विधि नीचे दे रहा हूं -

मंत्र दीक्षा एवं गुरू आज्ञा

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से **मंत्र दीक्षा** एवं **आज्ञा** अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से भी आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के ऊपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की

कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

मंत्र जप

संकल्प लेकर भक्त मंदार मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में स्फटिक अथवा कमलगट्टे की

माला पर जप करना चाहिए। यह जप आप 9,11,14,18,21,27,31,36,41 दिन में कर सकते हैं।

हवन

मंत्र जप के पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरूदेव से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए । यदि 125 माला से हवन करने का सामर्थ्य ना हो (धन का अभाव हो) तो हवन के नाम की 125 माला का मंत्र जप कर लेना चाहिए एवं कुछ माला का हवन करवा लेना चाहिए ।

तर्पण

मंत्र जप करने के पश्चात 1250 मंत्रो अथवा 13 माला से तर्पण करना चाहिए । तर्पण करने का मंत्र है "श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र (बर्तन) ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर " श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा तर्पयामि " बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जप उल्टे हाथ से करना चाहिए एवं सीधे

हाथ से तर्पण करना चाहिए । तर्पण के पश्चात इस जल को पौधों में डाल देना चाहिए ।

मार्जन

तर्पण के पश्चात 125 मंत्रो अथवा 2 माला से मार्जन करना चाहिए। मार्जन करने का मंत्र है "श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "श्रीं ह्रीं ऐं भगवती बगले मे श्रियम् देहि-देहि स्वाहा मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

कन्या अथवा ब्राहमण भोजन

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

पूजा का क्रम

१. आसन पूजा, आचमन एवं शुद्धि-करण

२. गुरू पूजन

३. गणेंश पूजन (हरिद्रा गणपति पूजन)

४. भैरव पूजन - शक्ति की उपासना में भैरव पूजन का विशेष महत्व होता है। माँ बगलामुखी के भैरव मृत्युंजय भैरव हैं इसलिए भगवती की उपासना से पहले भैरव जी से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं जप के अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करना चाहिए ।

५. ध्यान : इसके पश्चात भगवती पीताम्बरा का ध्यान करें कि माँ आपके हृदय में सहस्रदल कमल के फूल पर विराजित हैं। माँ के चरणों का ध्यान करते हुए मन ही मन उनके चरणों में पीले पुष्प अर्पित करें एवं उनसे सदैव अपने हृदय में निवास करने की प्रार्थना करें ।

६. माँ का पूजनः ध्यान करने के पश्चात सामर्थ्यानुसार गंध (इत्र), धूप, दीप, पुष्प, ताम्बूल (पान) चन्दन आदि माँ को समर्पित करें ।

७. कवचः इसके पश्चात माँ के कवच का पाठ करें। कवच का पाठ आपको साधना में आने वाली सभी विपत्तियों से दूर रखता है। कवच के पाठ से माँ का सान्निध्य प्राप्त होता है।

८. मंत्र जप - कवच के पाठ के बाद विनियोग, न्यासादि करें एवं उसके पश्चात अपने मंत्र का जप सुनिश्चित संख्या में करें ।

९. अन्य स्तोत्र एवं पाठ - मंत्र जप के पश्चात यदि समय हो तो भगवती के हृदय स्तोत्र, अष्टोत्तरशतनाम, सहस्रनाम आदि का पाठ करना चाहिए ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

१०. मृत्युंजय भैरव मंत्र - अन्त में दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र “ हौं जूं सः ” का जप अवश्य करना चाहिए ।

११. क्षमा याचना एवं जप समर्पण - अन्त में माँ से क्षमा याचना करें । अपने सीधे हाथ में थोड़ा जल लेकर अपने द्वारा किये गये सभी मंत्र जप को माँ के बायें हाथ में समर्पित करें एवं जल को माँ के बायें हाथ में अथवा बगलामुखी यंत्र पर चढा दें ।

१२. अन्त में माँ को प्रणाम करते हुए अपने आसन के नीचे जल डालकर अपने माथे से लगायें एवं बायें पैर को पहले पृथ्वी पर रखते हुए बाद में दायें पैर को पृथ्वी पर रखें ।

१३. साधना करने के बाद कम से कम आधा घण्टे तक मौन अवश्य रखना चाहिए । इससे साधक का तप क्षीण नही होता ।

१४. अपने आसन एवं माला को किसी भी व्यक्ति को छूने नही देना चाहिए चूँकि इन दोनो में साधक की आध्यात्मिक उर्जा छुपी होती है ।

१५. एक साधक को कभी भी किसी की निन्दा नही करनी चाहिए और ना ही कभी अंहकार करना चाहिए । ये दोनो साधक को दैवीय कृपा से दूर करते हैं और साधक की सारी उर्जा का नाश कर देतें हैं

१६. साधकों को मेरा एक परामर्श और भी है कि वे जब भी माँ पीताम्बरा अथवा किसी अन्य के मंत्रों का जप करें तो उनके समक्ष अपनी कोई लालसा या इच्छा व्यक्त न करें। वे आद्याशक्ति हैं, सम्पूर्ण सृष्टि की अधिष्ठात्री हैं, उनसे किसी भी साधक के मन की इच्छा छुपी हुई नहीं है। अतः अपनी इच्छा व्यक्त करके स्वयं को हल्का बनाना है। जब साधक अपनी कोई इच्छा लेकर माँ के मंत्रों का जप करता है और संकल्प लेता है कि अपने अमुक कार्य की पूर्णता के लिए मैं अमुक देवी या देवता के इतनी संख्या में जप करूंगा और उसका वह कार्य पूर्ण हो जाता है तो माँ की कृपा भी वंही समाप्त हो जाती है। आपने किसी कार्य की सफलता अथवा किसी भी प्रकार की प्राप्ति के लिए किसी भी देवी अथवा देवता के एक निश्चित संख्या में जप करने का संकल्प लिया और आपका कार्य पूर्ण हो गया तो फिर भगवती या देवता से आपको कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है। क्योंकि यह एक मात्र विनिमय है, आदान-प्रदान है। एक ऐसा विनिमय जो दो व्यक्तियों के मध्य परस्पर होता है। आपने किसी को कुछ दिया उसने बदले में आपका कार्य कर दिया। इसके उपरान्त कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध किसी प्रकार का नहीं रह जाता । आपको चाहिए कि आप जिस भी देवी-देवता का मंत्र जप करते हैं तो उसे केवल आप अपने देवता की प्रसन्नता के लिए कीजिए। यदि आपके मंत्र जप से आपका देवी-देवता प्रसन्न हो जाता है तो आपकी समस्त इच्छाएं आपके बिना व्यक्त किये ही पूर्ण हो जायेंगीं और अपने देवी-देवता से आपके सम्बन्ध भी प्रगाढ बने रहेगें। अतः आपको चाहिए

कि उनसे एकत्व करने का प्रयास करें न कि कुछ मांगने का। यदि आप ऐसा करते हैं तो मेरा वचन है कि आपकी प्रत्येक साधना पूर्णता को प्राप्त करेगी।

दीक्षा प्राप्ति विधान

जो साधक हमसे भगवती बगलामुखी साधना सीखने के इच्छुक हैं एवं दीक्षा प्राप्त करना चाहते हैं वो नीचे लिखी जानकारी हमें ईमेल द्वारा भेजें sumitgirdharwal@yahoo.com / shaktisadhna@yahoo.com -

आपका नाम एवं गोत्र

आपके माता-पिता/ पति का नाम

आपका एक फोटोग्राफ

आपका पता

आपकी जन्म-तिथि, जन्म स्थान एवं समय

प्रारम्भिक पूजा के मंत्र एवं विधि

भगवती की साधना करने का विशिष्ट समय रात्रिकाल माना गया है इसलिए यदि हो सके तो रात्रि ६ बजे से २ बजे के बीच ही अपनी साधना करनी चाहिए । लेकिन यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो अपने

समय की स्थिति के अनुसार समय निर्धारण कर लेना चाहिए, क्योंकि कुछ ना करने से अच्छा कुछ कर लेना है।

यह साधना घर में रहकर ही सम्पन्न की जा सकती है। साधना का स्थान शान्त एवं मनोरम होना चाहिए । साधना में बैठने से पूर्व स्नान कर लें यदि सम्भव ना हो तो हाथ-पैर धो सकते हैं। इस प्रकार बाह्य रूप से अपने आप को पवित्र कर लें। फिर पीले रंग का आसन बिछायें और स्वयं भी पीले वस्त्र धारण करें ।

इसके उपरान्त आसन पर बैठ जायें और मानसिक शुद्धि के लिए निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें। अपने शरीर पर थोड़ा सा जल छिड़कें-

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

अतिनील घनश्यामं नलिनायतलोचनम् ।

स्मरामि पुण्डरीकाक्षं तेन स्नातो भवाम्यहम् ।।

इसके पश्चात आचमन करें ।

सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् केशवाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् नाराणाय नमः ।

पुनः सीधे हाथ में थोड़ा सा जल लें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए पी जायें

ओम् माधवाय नमः ।

यह मन्त्र पढ़ते हुए हाथ धो लें ।

ओम् हृषीकेशाय नमः ।

इसके पश्चात आसन के नीचे हल्दी से एक त्रिकोण बनायें एवं यह मन्त्र पढ़ते हुए प्रणाम करें-

ओम् कामरूपाय नमः।

इसके पश्चात अपने आसन पर थोड़ा सा जल छिड़कें और निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें-

ओम् पृथ्वि ! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।

त्वं च धारय मां नित्यं ! पवित्रं कुरू चासनम् ।।

यह मन्त्र पढ़ते हुए आसन को प्रणाम करें-

क्लीं आधार शक्त्यै कमलासनाय नमः।

इसके पश्चात थोड़ी पीली सरसो लें एवं निम्नलिखित मंत्र पढते हुए अपने चारो और फेंक दें । यह आपका रक्षा कवच बन जायेगा और कोई भी बाह्य शक्ति आपकी पूजा में विघ्न नही डाल पायेगी ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञा ।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः र्सवतो दिशः ।

सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ।।

इसके पश्चात दीपक प्रज्जवलित करें एवं निम्नलिखित मंत्र पढें -

भो दीप देवीरूपस्तवं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत ।

यावत् कर्म समाप्ति स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

इसके बाद मूल मंत्र से १ः८ः४ के अनुपात से अनुलोम-विलोम प्राणायाम करें। अर्थात् एक मूल मंत्र से पूरक, आठ मंत्रों से कुम्भक तथा चार मंत्रों से रेचक करें। यह क्रिया जितनी अधिक से अधिक की जा सके, उतना ही अच्छा है।

अब अपने गुरू का ध्यान करते हुए उनकी वन्दना करें-

अखण्ड मण्डलाकारं व्यापतं येन चराचरम् ।

तत पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन शलाक्या ।

चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

देवतायाः दर्शनं च करूणा वरूणालयं ।

सर्व सिद्धि प्रदातारं श्री गुरूं प्रणमाम्यहम् ।।

वराभय कर नित्यं श्वेत पद्म निवासिनं ।

महाभय निहन्तारं गुरू देवं नमाम्यहम् ।।

इसके उपरांत श्रीनाथ, गणपति, भैरव आदि का ध्यान करके उन्हें नमन करें, क्योंकि इनकी कृपा के अभाव में कोई भी साधना पूर्ण नहीं होती है-

श्री नाथादि गुरू त्रयं गणपतिं पीठ त्रयं भैरवं,

सिद्धौघं बटुक त्रयं पदयुगं दूतिक्रमं मण्डलम्।

वीरान्द्वयष्ट चतुष्कषष्टिनवकं वीरावली पंचकम्,

श्रीमन्मालिनि मंत्रराज सहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम्।।

वन्दे गुरूपद-द्वन्द्वांग-मन-सगोचरम्,

रक्त शुक्ल-प्रभा-मिश्रं-तर्क्यं त्रैपुरं महः !

गुरूदेव का ध्यान करने के उपरान्त निम्नांकित मंत्रों से देवी-देवताओं को नमस्कार करें-

ओम् श्री गुरूवे नमः ।

ओम् क्षं क्षेत्रपालाय नमः ।

ओम वास्तु पुरूषाय नमः ।

ओम् विघ्न राजाय नमः ।

ओम् दुर्गाय नमः ।

ओम् विघ्न राजाय नमः ।

ओम शम्भु शिवाय नमः ।

ओम् भैरवाय नमः ।

ओम् बटुकायै नमः ।

ओम् ब्रह्मायै नमः ।

ओम् नैर्ऋतियै नमः ।

ओम् चक्रपाणायै नमः ।

ओम् विघ्न नाथायै नमः ।

ओम् ऋष्यै नमः ।

ओम् देवतायै नमः ।

ओम् वेद शास्त्रायै नमः ।

ओम् वेदार्थाय नमः ।

ओम् पुराणायै नमः ।

ओम् ब्राह्मणायै नमः ।

ओम् योगिन्यौ नमः ।

ओम् दिक्पालायै नमः ।

ओम् सिद्धपीठायै नमः ।

ओम् तीर्थायै नमः ।

ओम् मंत्र-तंत्र-यंत्रायै नमः ।

ओम् मातृकायै नमः ।

ओम् पंचभूतायै नमः ।

ओम् महाभूतायै नमः ।

ओम् सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

ओम् सर्वाभ्यो देवीभ्यो नमः ।

ओम् सर्वेभ्यो ऋषिभ्यो नमः ।

इसके पश्चात भैरव जी से भगवती की आराधना करने की अनुमति लें-

तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।

भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

अब दस बार मुखशोधन मंत्र ऐं ह्रीं ऐं का जाप करें

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

इसके पश्चात बगलामुखी कुल्लुका ओम् हूं क्ष्रौं (Om Hoom Chraum) का दस बार सिर पर जाप करें ।

उपरोक्त दी गयी पूजा प्रारिम्भक पूजा है। इसके बाद भगवती का ध्यान, विनियोग मंत्र जप आदि करना चाहिए ।

पीताम्बरा साधना की सरल विधि

जिन साधको को संस्कृत का कम ज्ञान है एवं जिन्हे उपरोक्त दी गयी विधि कठिन प्रतीत होती है वो नीचे दी गयी विधि का प्रयोग करें - आसन पर बैठकर अपने गुरूदेव का ध्यान करें, इसके बाद गणेश जी का ध्यान करे, इसके बाद भैरव जी से भगवती की पूजा की आज्ञा लेकर भगवती का ध्यान करें, फिर मंत्र का विनियोग कर न्यास करें एवं मंत्र जप करें । मंत्र जप के बाद दशांश मृत्युंजय भैरव मंत्र " हौं जूं सः " का जप अवश्य करें । अन्त में अपनी सम्पूर्ण पूजा भगवती को समर्पित कर आसन से उठ जायें ।

Baglamukhi Ekakshari Beej Mantra Sadhana Vidhi

।। भगवती पीताम्बरा के एकाक्षरी बीज मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र को महामंत्र के नाम से जाना जाता है ऐसा कहा जाता है कि भगवती बगलामुखी की उपासना करने वाले साधक के सभी कार्य बिन कहे ही पूर्ण हो जाते हैं और जीवन की हर बाधा को वो हंसते हंसते पार कर जाते हैं मैनें स्वयं अपने जीवन में अनेको चमत्कार देखें हैं, जिनको सुनकर कोई भी यकीन नही करेगा लेकिन भगवती पीताम्बरा अपने भक्तों के उपर ऐसे ही कृपा करती हैं

एकाक्षरी मंत्र माँ पीताम्बरा का बीज मंत्र है। माँ पीताम्बरा की साधना इसी बीज मंत्र से प्रारम्भ होती है, एवं मेरी साधको को परामर्श है कि बीज मंत्र का नियमित रूप से कम से कम २१ माला का जप अवश्य करना चाहिए, क्योंकि बीज में ही मंत्र ही देवता के प्राण होते हैं जिस प्रकार बीज के बिना वृक्ष की कल्पना नही की जा सकती उसी तरह बीज मंत्र के जप के बिना साधना में सफलता के बारे में सोचना भी व्यर्थ है। भगवती की सेवा केवल मंत्र जप से ही नही होती है बल्कि उनके नाम का गुणगान करने से भी होती है । जिस प्रकार नारद ऋषि हर पल भगवान विष्णु का नाम जपते थे, उसी प्रकार सुधी साधको को माँ पीताम्बरा का नाम जप हर पल करना चाहिए एवं अन्य लोगो को भी उनके नाम की महिमा के बारे में बताना चाहिए । मैंने अपने जीवन का केवल एक ही उद्देश्य बनाया है कि माँ पीताम्बरा के नाम को हर व्यक्ति तक पहुंचाना है। आप सब भी यदि माँ की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं तो आज से ही भगवती की उपासना को अपने जीवन में उतार लीजिए एवं माँ के नाम एवं उनकी महिमा का अधिक से अधिक प्रचार करना शुरू कर दीजिए। साधको के हितार्थ भगवती के बीज मंत्र की जानकारी यहां दे रहा हूँ, भगवती पीताम्बरा आप सब पर कृपा करें ।

ध्यान

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति।

क्रोधी शान्तति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति।।

गर्वी खवर्ति सर्व विच्च जडति त्वद्‌यन्त्राणा यंत्रितः।

श्रीनित्ये बगलामुखि! प्रतिदिनं कल्याणि! तुभ्यं नमः।।

बीज मंत्र - ह्लीं (Hlreem)

विनियोगः- सीधे हाथ में जल लेकर केवल एक बार पढें

ओम् अस्य एकाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः-

- ओम् ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदि।
- लं बीजाय नमः गुह्ये।
- ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
- ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः

- ओम् ह्ल्रां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्ल्रीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं शिखायै वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्ल्रौं नेत्र-त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः अस्त्राय फट्।

करन्यासः

- ओम ह्ल्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम ह्ल्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

बीज मंत्र का अनुष्ठान

एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । उसके पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, क्योंकि हवन से देवता को शक्ति मिलती है और मैंने स्वयं इसका अनुभव किया है कि हवन से माँ की कृपा बहुत जल्दी मिलती है। इसलिए हवन से बढकर कुछ नही है। यदि हो सके तो हवन नियमित रूप से करना चाहिए । जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरू से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए इसके पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण करने का मंत्र है "हल्रीं तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर "हल्रीं तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए ।

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "हल्रीं मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा

लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "ह्ल्रीं मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

....

Baglamukhi Chaturakshar Mantra Evam Pooja Vidhi in Hindi

माँ बगलामुखी चतुरक्षर मंत्र एवं पूजा विधि

।। भगवती पीताम्बरा के चतुरक्षर मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र का अनुष्ठान बीज मंत्र (ह्ल्रीं) के अनुष्ठान के बाद किया जाता है। ऐसा देखा गया है कि बीज मंत्र का अनुष्ठान तो साधक बिना किसी समस्या के कर लेते हैं, लेकिन चतुरक्षर के अनुष्ठान में उन्हें थोड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। समस्या से यहां तात्पर्य भगवती द्वारा ली जाने वाली परीक्षा से है। इस मंत्र में कई बार ऐसी परिस्थिति पैदा हो जाती है कि आपका अनुष्ठान बीच में ही छूट जाये, जैसे कहीं अचानक बाहर जाना पड़ जाये अथवा किसी कार्य में इतनी अधिक व्यस्तता हो जाये कि उस दिन के निर्धारित जप

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

करने का समय ना मिले इत्यादि, लेकिन साधको को किसी भी परिस्थिति में किसी भी दिन जप नही छोड़ना है । यदि किसी कारण वश बाहर जाना भी पड़ भी जाये तो वही पर जाकर अपना जप पूर्ण करें एवं भगवती से क्षमा प्रार्थना करें । यदि आपने यह अनुष्ठान एक बार पूर्ण कर लिया तो भगवती की कृपा को प्राप्त करने से आपको कोई नही रोक सकता । भगवती पर विश्वास रखें एवं नियमित रूप से अपना जप करते रहें, आपको सफलता अवश्य मिलेगी ।

मन्त्र

ओम् आं ह्ल्रीं क्रों । (Om Aam Hlreem Krom)

(कृपया दीक्षित साधक ही इसका जप करें। जिनकी दीक्षा नही हुई है वो सबसे पहले दीक्षा ग्रहण करें)

विनियोग

ओम् अस्य श्री बगला चतुर्क्षरी मन्त्रस्य श्री ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्री बगलामुखी देवता, ह्ल्रीं बीजं, आं शक्तिः, क्रों कीलकं, श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान

कुटिलालक संयुक्तां मदाघूर्णित लोचनां,

मदिरामोद वदनां प्रवाल सदृशाधराम् ।।

सुवर्णकलश प्रख्य कठिन स्तन मण्डलां,

आवर्त्त विलसन्नाभिं सूक्ष्म-मध्यम संयुताम्।।

रम्भोरू पाद-पद्मां तां पीतवस्त्र समावृताम् ।

ऋष्यादिन्यासः-

- श्री ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवताय नमः हृदि।
- ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये।
- आं शक्तये नमः पादयोः।
- क्रों कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

षडंगन्यासः-

- ओम् ह्ल्रां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्ल्रीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं शिखाय वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं कवचाय हूं।
- ओम् ह्ल्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः अस्त्राय फट्।

करन्यासः

- ओम् ह्ल्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम् ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम् ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

चतुर्क्षर मंत्र का अनुष्ठान

जब साधक का एकाक्षरी मंत्र (बीज मंत्र - ह्लीं) का अनुष्ठान पूर्ण जो जाये तो उसके बाद गुरूदेव से चतुरक्षर मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए। चतुरक्षर मंत्र का अनुष्ठान भी एकाक्षर मंत्र के समान होता है। किसी भी अनुष्ठान के ६ अंग होते हैं -

मंत्र दीक्षा एवं गुरू आज्ञा

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से मंत्र दीक्षा एवं आज्ञा अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से भी आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है। अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

मंत्र जप

संकल्प लेकर चतुरक्षर मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । यह जप आप 9,11,14,18,21,27, 31,36,41 दिन में कर सकते हैं।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

हवन

मंत्र जप के पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरूदेव से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए । यदि 125 माला से हवन करने का सामर्थ्य ना हो (धन का अभाव हो) तो हवन के नाम की 125 माला का मंत्र जप कर लेना चाहिए एवं कुछ माला का हवन करवा लेना चाहिए ।

तर्पण

मंत्र जप करने के पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए । तर्पण करने का मंत्र है "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र (बर्तन) ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों तर्पयामि" बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए । तर्पण के पश्चात इस जल को पौधों में डाल देना चाहिए ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

मार्जन

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों मार्जयामि" बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

कन्या अथवा ब्राहमण भोजन

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए ।

Baglamukhi Ashtakshar Mantra Evam Pooja Vidhi in Hindi

माँ बगलामुखी अष्टाक्षर मंत्र एवं पूजा विधि

।। भगवती पीताम्बरा के अष्टाक्षर मंत्र का महात्म्य ।।

भगवती बगलामुखी (पीताम्बरा) के इस मंत्र का अनुष्ठान चतुराक्षर मंत्र के अनुष्ठान के बाद किया जाता है भगवती का यह मंत्र बहुत ही प्रभावशाली एवं चमत्कारी है इसकी महिमा को बताने के लिए अपने एक शिष्य के अनुभव को यहां लिख रहा हूं -

मेरे एक शिष्य को बहुत प्रयास करने के बाद भी कहीं कोई नौकरी नही मिल रही थी। बहुत अच्छी डिग्रियां हाने के बाद भी सभी जगह से उसे निराशा ही हाथ लग रही थी। तब मैनें उसे इस मंत्र का एक अनुष्ठान करने को कहा । उसने विधिवत अनुष्ठान शुरू किया और एक सप्ताह

बाद ही उसका बहुत बड़ी कम्पनी में चयन हो गया।

यह तो बस एक छोटा सा अनुभव है। इसके अलावा ऐसे बहुत सारे लोग हैं जिन्हें प्रेत बाधा, शत्रु बाधा, नौकरी, पारिवार में कलह, व्यवसाय में असफलता, विवाह, संतान ना होना, आदि समस्याओं में ऐसे परिणाम मिले हैं कि कोई साधारण मनुष्य तो विश्वास भी नही करेगा।

यहां साधको के हितार्थ भगवती के अष्टाक्षर मंत्र का विधान दे रहा हूं -

(कृपया दीक्षित साधक ही इसका जप करें। जिनकी दीक्षा नही हुई है वो सबसे पहले दीक्षा ग्रहण करें)

अष्टाक्षर मंत्र

ओम् आं ह्ल्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा

om aam hlreem krom hum phat swaha

ध्यान

युवती च मदोन्मत्तां पीताम्बर-धरां शिवाम्।

पीतभूषण-भूषांगी समापीन-पयोधराम्।।

मदिरामोद-वदनां प्रवाल-सदृशाधराम्।

पानं पात्रं च शुद्धिं च विभ्रतीं बगलां स्मरेत्।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

विनियोगः-

ओम् अस्य अष्टाक्षरी बगला मंत्रस्य ब्रह्म ऋषिः, गायत्री छन्दः, बगलामुखी देवताः, लं बीजं, ह्रीं शक्ति, ईं कीलकं, मम सर्वार्थ सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः-

- श्री ब्रह्म ऋषये नमः शिरसि।
- गायत्री छंदसे नमः मुखे।
- श्री बगलामुखी देवताय नमः हृदि।
- लं बीजाय नमः गुह्ये।
- ह्रीं शक्तये नमः पादयोः।
- ईं कीलकाय नमः सर्वांगे।
- श्री बगलामुखी देवताम्बा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अंजलौ।

षडंगन्यासः-

- ओम् ह्लां हृदयाय नमः।
- ओम् ह्लीं शिरसे स्वाहा।
- ओम् ह्लूं शिखायै वषट्।
- ओम् ह्लैं कवचाय हूं।

- ओम् ह्ल्रौं नेत्र त्रयाय वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः अस्त्राय फट्।

करन्यासः-

- ओम् ह्ल्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
- ओम् ह्ल्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।
- ओम् ह्ल्रूं मध्यमाभ्यां वषट्।
- ओम् ह्ल्रैं अनामिकाभ्यां हूं।
- ओम् ह्ल्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।
- ओम् ह्ल्रः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

अष्टाक्षर मंत्र का अनुष्ठान

जब साधक का एकाक्षरी एवं चतुराक्षरी मंत्र का अनुष्ठान पूर्ण जो जाये तो उसके बाद गुरूदेव से अष्टाक्षर मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए। अष्टाक्षर मंत्र का अनुष्ठान भी एकाक्षर एवं चतुरक्षर मंत्र के समान होता है। किसी भी अनुष्ठान के ६ अंग होते हैं -

मंत्र दीक्षा एवं गुरू आज्ञा

अनुष्ठान करने से पूर्व अपने गुरू से **मंत्र दीक्षा** एवं **आज्ञा** अवश्य लेनी चाहिए एवं अनुष्ठान पूर्ण हाने के पश्चात उन्हे सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा अवश्य देनी चाहिए। अपने माता पिता से भी आशीर्वाद अवश्य लें चूंकि उन्ही के कारण आप इस संसार में आयें हैं । जिन लोगो के उपर माता-पिता एवं गुरू की कृपा है उनके ऊपर माँ की कृपा स्वयं ही हो जाती है। अपने माता-पिता एवं गुरू को रूष्ट कर आप माँ की कृपा कभी भी प्राप्त नही कर सकते।

मंत्र जप

संकल्प लेकर अष्टाक्षर मंत्र का एक लाख पच्चीस हजार (1,25,000 मंत्रो अथवा 1250 माला) की संख्या में हल्दी की माला पर जप करना चाहिए । यह जप आप 9,11,14,18,21,31,36,41 दिन में कर सकते हैं।

हवन

मंत्र जप के पश्चात (12,500 मंत्रो अथवा 125 माला) से हवन अवश्य करना चाहिए, जो लोग हवन करने में समर्थ नही हैं उन्हे अपने गुरूदेव से अनुष्ठान के पश्चात हवन करने का आग्रह करना चाहिए । यदि 125 माला से हवन करने का सामर्थ्य ना हो (धन का अभाव हो) तो हवन के नाम की 125 माला का मंत्र जप कर लेना चाहिए एवं कुछ माला का हवन करवा लेना चाहिए ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

तर्पण

मंत्र जप करने के पश्चात (1250 मंत्रो अथवा 13 माला) से तर्पण करना चाहिए । तर्पण करने का मंत्र है "ओम् आं ह्ल्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा तर्पयामि" । इसके लिए एक बड़ा पात्र (बर्तन) ले, जिसमें १ से २ लीटर पानी आ जाये। उसके पश्चात उसमें थोड़ा गंगा जल लें । उसके बाद उसमें ऊपर तक पानी भर लें एवं थोड़ी हल्दी, शहद, शक्कर, केसर, दुध मिला लेना चहिए । उसके पश्चात जिस प्रकार सुर्य को हाथों से अंजली में जल भरकर अर्घ्य दिया जाता है उसी प्रकार सीधे हाथ से अंजली बनाकर " ओम् आं ह्ल्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा तर्पयामि " बोलते हुए उसी पात्र में जल को छोड़ देना चाहिए । तर्पण करते हुए मंत्र जाप उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर करना चाहिए एवं सीधे हाथ से तर्पण करना चाहिए । तर्पण के पश्चात इस जल को पौधों में डाल देना चाहिए ।

मार्जन

तर्पण के पश्चात (125 मंत्रो अथवा 2 माला) से मार्जन करना चाहिए । मार्जन करने का मंत्र है " ओम् आं ह्ल्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा मार्जयामि" । इसके लिए थोड़ी सी कुशा लें। एक पात्र में गंगा जल लेकर उस कुशा से भगवती के यंत्र पर " ओम् आं ह्ल्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा मार्जयामि " बोलते हुए गंगा जल की छींटे दे। मार्जन भी सीधे हाथ से करना चाहिए

एव उल्टे हाथ से हल्दी की माला पर जप करना चाहिए। यदि कुशा उपलब्ध ना हो तो पीले फूल का भी उपयोग किया जा सकता है।

कन्या अथवा ब्राहम्ण भोजन

मार्जन करने के पश्चात ११ कन्याओं को भोजन कराना चाहिए एवं उनकी प्रसन्नता के लिए उन्हें सामर्थ्यानुसार वस्त्र एवं दक्षिणा देनी चाहिए।

....

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

Devi Baglamukhi Hridaya Mantra

।। श्रीबगलामुखीहृदयमंत्र ।।

हृदय मंत्र को देवता का हृदय कहा जाता है इसके जप से देवता का सानिध्य बढ़ता है एवं सिद्ध होने पर दर्शन प्राप्त होते हैं अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा लेकर ही इसका जप करें । कई बार ऐसा देखा गया है कि कुछ लोग साधना के प्रारम्भ में ही हृदय मंत्र का जप शुरू कर देते है और जैसे ही देवता का सानिध्य बढ़ता है तो घबरा जाते है और डर से अपनी साधना बीच में ही छोड़ देतें है। इसलिए साधको को मेरा परामर्श है कि जब आपके गुरूदेव कहें तभी इसका जप करें । नये साधको को इसके स्थान पर बगलामुखी हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदयमंत्रस्य नारदः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, हल्रीं बीजम्, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, श्रीबगलामुखी प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

ॐ नारदऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः मुखे । श्रीबगलामुखी देवतायै नमः हृदि । हल्रीं बीजाय नमः गुह्ये । क्लीं शक्तये नमः पादयोः । ऐं कीलकाय नमः सर्वांगें

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

करन्यास

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । क्लीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।ऐं मध्यमाभ्यां वषट् । ह्लीं अनामिकाभ्यां हुम् । क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट् ।

हृदयादिन्यास-

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः । क्लीं शिरसे स्वाहा । ऐं शिखायै वषट् । ह्लीं कवचाय हुम् ।क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ऐं अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

बालभानुप्रतीकाशां नीलकोमलकुन्तलाम् ।
वन्देऽहं बगलां देवीं स्तम्भनास्त्ररुपिणीम् ।।

मंत्र- आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं बगलामुखी ! आवेशय आवेशय, आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररुपिणी ! एहि एहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवाहय आवाहय, सान्निध्यं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों ममैव हृदये चिरं तिष्ठ तिष्ठ, आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा ।

Mantra : Aam Hlreem Krom Glaum Hoom Aim Kleem Shreem Hreem Baglamukhi ! Aaveshaya Aaveshaya, Aam Hlreem Krom BrahmastraRupini ! Aehi Aehi Aam Hlreem Krom Mama Hridaye Aavahaya Avahaya, Saanidhyam Kuru Kuru Aam Hlreem Krom Mameva Hridaye Chiram Tishth Tishth, Aam Hlreem Krom Hoom Phat Swaha

प्रयोग- इस मंत्र का प्रयोग किसी विशेष परिस्थिति में ही करना चाहिए क्योंकि यह बहुत ही अधिक ही तीव्र है। मंत्र प्रयोग के बाद बगला गायत्री एवं मूल मंत्र का अनुष्ठान देवी की प्रसन्नता के लिए अवश्य करना चाहिए ।

सांख्यायनतंत्र में इस दुर्लभ मंत्र की प्रशंसा करते हुए कहा है कि इसके स्मरण मात्र से महादरिद्र व्यक्ति भी लक्ष्मीवान् हो जाता है, जड़ व्यक्ति पण्डित हो जाता है, चोर भी बुद्धिमान बन जाता है एवं निन्दित मनुष्य भी कीर्तिवान् हो जाता है। शत्रु पर इस मंत्र का प्रयोग करने से साधक का प्रतिष्ठावान् शत्रु भी समाज में उपहास व असम्मान का पात्र बनता है। इस मंत्र की साधना जापक को समस्त प्रकार से संतुष्ट रखती है। आस्थापूर्वक निरन्तर जप करने से जापक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

- मंत्र को सिद्ध करने के पश्चात् उक्त मंत्र से बंध्या स्त्री के गर्भांग का मार्जन करने से छह मास की अवधि में गर्भधारण करके पुत्र को जन्म देती है। इसके साथ में बगला कवच से अभिमंत्रित जल स्त्री को देना चाहिए ।
- सूर्यादय के समय बगलाहृदय मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित दूध पीने से छह मास के भीतर बन्ध्या भी पुत्र को जन्म देती है।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

- शत्रु के अभिचारिक प्रयोग के कारण कोई भयानक रोग, व्याधि या महाभय उत्पन्न होने पर इस अमोघ मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित जल पीने से तुरन्त रोग या महाभय से छुटकारा मिलता है।

Ma Baglamukhi Manas Pujan

मां बगलामुखी मानस पूजन

ॐ लं पृथ्वी तत्वात्मकं गन्धं श्रीबगलामुखी प्रीतये समर्पयामि नमः ।
ॐ हं आकाश तत्वात्मकं पुष्पं श्रीबगलामुखी प्रीतये समर्पयामि नमः ।
ॐ यं वायु तत्वात्मकं धूपं श्रीबगलामुखी प्रीतये घ्रापयामि नमः ।
ॐ रं अग्नि तत्वात्मकं दीपं श्रीबगलामुखी प्रीतये दर्शयामि नमः ।
ॐ वं जल तत्वात्मकं नैवेद्यं श्रीबगलामुखी प्रीतये निवेदयामि नमः ।
ॐ सं सर्व तत्वात्मकं ताम्बूलं श्रीबगलामुखी प्रीतये समर्पयामि नमः ।

उपरोक्त बीज मंत्रो का चक्रो पर प्रभाव

लं बीज के जाप से मूलाधार चक्र जाग्रत होता है जो पृथ्वी तत्व का द्योतक है
वं बीज के जाप से स्वाधिष्ठान चक्र जाग्रत होता है जो जल तत्व का द्योतक है

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

रं बीज के जाप से मणिपुर चक्र जाग्रत होता है जो अग्नि तत्व का द्योतक है।
यं बीज के जाप से अनाहत चक्र जाग्रत होता है जो वायु तत्व का द्योतक है।
हं बीज के जाप से विशुद्धि चक्र जाग्रत होता है जो आकाश तत्व का द्योतक है।

Haridra Ganapati Sadhana

हरिद्रा-गणपति साधना

हरिद्रा गणपति मां बगलामुखी के अंग देवता है। इसलिए जो साधक बगलामुखी की आराधना करते हैं, उन्हें हरिद्रा गणपति की साधना, पूजा अवश्य करनी चाहिए। इनकी साधना करने से शत्रु का हृदय द्रवित होकर साधक के वशीभूत हो जाता है। इनकी साधना अभिचारिक कर्म को भी नष्ट करने के लिए की जाती है। यही कारण है कि मां त्रिपुरसुन्दरी के द्वारा स्मरण किये जाने पर हरिद्रा गणपति ने प्रकट होकर भण्डासुर दैत्य के द्वारा किये गये अभिचार यंत्र को नष्ट कर दिया था।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

हरिद्रा हल्दी को कहा जाता है। सभी साधक जानते हैं कि विवाह आदि जैसे मंगल कार्यो में हल्दी पाउडर के लेप का प्रयोग किया जाता है। उसका कारण यह है कि हल्दी को अति शुभ, सुख-सौभाग्य दायक एवं विघ्न विनाशक माना जाता है। हल्दी अनेकों बीमारियों में भी अचूक अस्त्र की भांति कार्य करती है। इसीलिए हरिद्रा गणपति को अत्यन्त ही शुभ माना जाता है। काम्य प्रयोग में विशेष रूप से इनकी साधना मनवांछित विवाह, पुत्र प्राप्ति, मनोवांछित फल प्राप्ति एवं शत्रु को वश में करने के लिए की जाती है।

साधक को चाहिए कि भूत-शुद्धि आदि करने के उपरान्त वह संकल्प लेकर हरिद्रा गणपति जी के मंत्र का विनियोग करे। विनियोग निम्नवत् हैः-

विनियोग :- ओम् अस्य श्री हरिद्रा गणनायक मंत्रस्य मदन ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, हरिद्रागणनायको देवता आत्मनो-अभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

षडंग न्यास :-

ओम् हुं गं ग्लौं हृदयाय नमः।
ओम् हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा।
वरवरद शिखायै वषट्,
सर्वजन हृदयं कवचाय हुम्।
स्तम्भय-स्तम्भय नेत्र त्रयाय वौषट्।
स्वाहा अस्त्राय फट्।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

ध्यान

पाशांकुशौ मोदकमेकदन्तं, करैर्दधानं कनकासनस्थम्।
हरिद्राखण्ड-प्रतिमं त्रिनेत्रं, पीतांशुकं रात्रि गणेश मीडे।।

अर्थात् जो अपने दाहिने हाथों में अंकुश और मोदक तथा बांये हाथों में पाश एवं दन्त धारण किये हुए सोने के सिंहासन पर विराजित हैं- ऐसे हल्दी जैसी आभा वाले, तीन नेत्रों वाले तथा पीले वस्त्र धारण करने वाले हरिद्रा गणपति की मैं वन्दना करता हूं।

मन्त्र :- ओम् हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपतये वरवरद सर्वजन हृदयं स्तम्भय-स्तम्भय स्वाहा।

MANTRA : OM HOOM GAM GLAUM HARIDRAGANAPATAYE VARA-VARADA SARVAJANA HRIDAYAM STAMBHAYA-STAMBHAYA SWAAHA

पुरश्चरण विधान

सर्वप्रथम पीठ पर अंगपूजा, मातृका पूजन एवं दिक्पाल आदि का पूजन करें। गुड़ व हल्दी को पीसकर इनकी पिष्ठी से या केवल हल्दी चूर्ण से गणपति जी की प्रतिमा बनाकर उसका षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करें। एक निश्चित अवधि निर्धारित करके, संकल्प लेकर हरिद्रा गणपति मंत्र का चार लाख की संख्या में जप करें। उसके दशांश अर्थात चालीस हजार मंत्रों से हवन करें। हवन के लिए सामग्री के रूप में

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

चावलों में पिसी हल्दी व थोड़ा सा शुद्ध घी मिला लें। हवन के उपरान्त इसका दशांश तर्पण एवं तर्पण का दशांश मार्जन करके मार्जन के दशांश ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने से हरिद्रा गणपति मंत्र समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला हो जाता है।

प्रयोग विधि

किसी भी शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथी को कुंवारी कन्या द्वारा पीसी गयी हल्दी का पेस्ट बनाकर अपने शरीर पर उसका लेपन करें। तदोपरान्त स्वच्छ जल से स्नान करके हरिद्रा गणपति का पूजन करें। इसके बाद गणेश जी के सम्मुख बैठकर मंत्र के अन्त में 'तर्पयामि' शब्द लगाकर गणेश जी का तर्पण करें और उसके बाद उपरोक्त मंत्र का १००८ की संख्या में जप करें।

जप करने के बाद १०० मालपुओं से आहुतियां देकर ब्रह्मचारियों को भोजन करायें और कन्याओं तथा अपने गुरूदेव को भी सन्तुष्ट करके अपने अभीष्ट की प्राप्ति करें।

लाजा की सामग्री से होम करने पर कन्या को उत्तम वर की प्राप्ति एवं वर को उत्तम कन्या की प्राप्ति होती है।

किसी स्त्री को संतान न होती हो तो ऐसी स्त्री को चाहिए कि वह ऋतुस्नान अथवा मासिक धर्म के उपरान्त गणपति का पूजन करके चार तोला, लगभग ५० ग्राम गोमूत्र में दूधवच अर्थात् दूध में भिगोयी गयी वच एवं हल्दी पीस करके उसे १००० बार गणपति के उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित करें, फिर कन्या एवं वटुकों, अर्थात् छोटे लड़कों को लड्डू

खिलाकर स्वयं द्वारा तैयार की गयी उपरोक्त दवाई का पान करे तो उसे योग्य पुत्र की प्राप्ति होती है।

इसके अतिरिक्त इस मंत्र की उपासना करने से वैरियों का वाणी स्तम्भन, उनकी गतिविधियों का स्तम्भन हो जाता है। इस मंत्र के प्रभाव से जल, अग्नि, चोर, सिंह एवं अस्त्र आदि का प्रकोप भी रोका जा सकता है।

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को योग्य गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है -
sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English

translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

<u>Our Books</u>

1. **Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

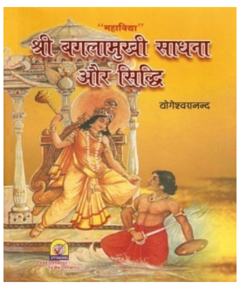

2. **Mantra Sadhana**

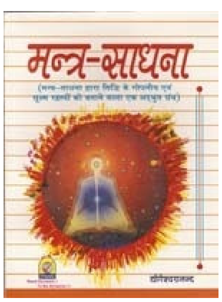

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

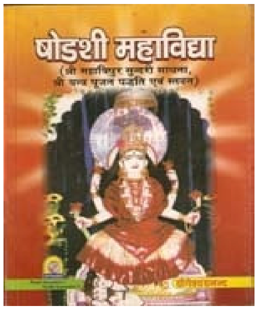

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680/= नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Baglamukhi Kavach In Hindi and English

Shri Yogeshwaranand Ji
+919917325788, +919675778193
shaktisadhna@yahoo.com
www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

मां बगलामुखी के प्रत्येक साधक को प्रतिदिन जाप प्रारम्भ करने से पहले इस कवच का पाठ अवश्य करना चाहिए । यदि हो सके तो सुबह दोपहर शाम तीनों समय इसका पाठ करें । यह कवच विश्वसारोद्धार तन्त्र से लिया गया है। पार्वती जी के द्वारा भगवान शिव से पूछे जाने पर भगवती बगला के कवच के विषय में प्रभु वर्णन करते हैं कि देवी बगला शत्रुओं के कुल के लिये जंगल में लगी अग्नि के समान हैं। वे साम्रज्य देने वाली और मुक्ति प्रदान करने वाली हैं।

भगवती बगलामुखी के इस कवच के विषय में बहुत कुछ कहा गया है। इस कवच के पाठ से अपुत्र को धीर, वीर और शतायुष पुत्र की प्राप्ति होति है और निर्धन को धन प्राप्त होता है। महानिशा में इस कवच का पाठ करने से सात दिन में ही असाध्य कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। तीन रातों को पाठ करने से ही वशीकरण सिद्ध हो जाता है। मक्खन को इस कवच से अभिमन्त्रित करके यदि बन्धया स्त्री को खिलाया जाये, तो वह पुत्रवती हो जाती है। इसके पाठ व नित्य पूजन से मनुष्य बृहस्पति के समान हो जाता है, नारी समूह में साधक कामदेव के समान व शत्रओं के लिये यम के समान हो जाता है। मां बगला के प्रसाद से उसकी वाणी गद्य-पद्यमयी हो जाती है । उसके गले से कविता लहरी का प्रवाह होने लगता है। इस कवच का पुरश्चरण एक सौ ग्यारह पाठ करने से होता है, बिना पुरश्चरण के इसका उतना फल प्राप्त नहीं होता। इस कवच को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर पुरुष को दाहिने हाथ में व स्त्री को बायें हाथ में धारण करना चाहिये।

ध्यान

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीताशुकोल्लासिनीम् ।
हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम् ।।
हस्तैर्मुदगर पाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः।

व्याप्तागीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकवचस्य भैरव ऋषिः, विराट् छन्दः श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम परस्य च मनोभिलाषितेष्टकार्यसिद्धये विनियोगः।

ऋषि-न्यास

शिरसि भैरव ऋषये नमः।
मुखे विराट छन्दसे नमः।
हृदि बगलामुखीदेवतायै नमः।
गुह्ये क्लीं बीजाय नमः।
पादयो ऐं शक्तये नमः।
सर्वांगे श्रीं कीलकाय नमः ।

करन्यास

ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास

ॐ ह्लां हृदयाय नमः।
ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्लूं शिखायै वषट्।
ॐ ह्लैं कवचाय हुम।
ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

मन्त्रोद्धारः

ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय नाशय मामैश्वर्याणि देहि देहि, शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्लीं स्वाहा।

कवच

शिरो मे पातु ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने ।।1।।
श्रुतौ मम् रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम् ।
पातु गण्डौ सदा मामैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ।।2।।
देहि द्वन्द्वं सदा जिहवां पातु शीघ्रं वचो मम ।
कण्ठदेशं मनः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ।।3।।
कार्यं साधयद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम ।
मायायुक्ता यथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ।।4।।
अष्टाधिकचत्वारिंशदण्डाढया बगलामुखी ।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ।।5।।
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वांगे सर्वसन्धिषु ।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ।।6।।
ॐ ह्रीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु ।
मुखिवर्णद्वयं पातु लिगं मे मुष्कयुग्मकम् ।।7।।
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् ।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णाः परमेश्वरी ।।8।।
जंघायुग्मे सदापातु बगला रिपुमोहिनी ।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रय मम ।।9।।
जिहवावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ।।10।।
विनाशयपदं पातु पादांगुल्योंनखानि मे ।
ह्रीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धिन्द्रियवचांसि मे ।।11।।
सर्वागं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु ।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ।।12।।
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु ।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चापराजिता ।।13।।
वाराही च उत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ।।14।।
इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च सवाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ।।15।।
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु ।

द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ।।16।।
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।

फलश्रुति

इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ।।17।।
श्रीविश्वविजयं नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदाम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ।।18।।
निर्धनो धनमाप्नोति कवचास्यास्य पाठतः ।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्री बगलामुखीम् ।।19।।
पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात् तु यः ।
यद् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले ।।20।।
तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शंकरि ।
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रो शक्तिसमन्वितः ।।21।।
कवचं यः पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन ।
यं ध्यात्वा प्रजपेन्मन्त्रं सहस्त्रं कवचं पठेत् ।।22।।
त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः ।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया ।।23।।
लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम् ।
एकविंशददिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्त्रकम् ।।24।।
जपत्वा पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम्।
संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा।।25।।
विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात् ।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ।।26।।
नवनीतं चाभिमन्त्रय स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरि ।
वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः ।।27।।
श्मशानांगारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया ।।28।।
भूमौ शत्रोः स्वरुपं च हृदि नाम समालिखेत् ।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम् ।।29।।
ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेंऽहनि न संशयः ।।30।।
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत् ।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।।31।।

संग्रामे जयमप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् ।
सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः फलमालभेत् ।।32।।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ।
वृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः ।।33।।
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमः ।
कवितालहरी तस्य भवेद् गंगाप्रवाहवत् ।।34।।
गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवी प्रसादतः ।
एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते ।।35।।
पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम् ।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ।।36।।
देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाऽऽप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम् ।।37।।
शतकोटिं जपित्वा तु तस्य सिद्धिर्न जायते ।
दाराढयो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां ।।38।।
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम् ।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽष्टगन्धेन वै ।।39।।
धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु ते दासोऽस्ति तेषां नृपः ।
इति श्रीविश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे
बगलामुखी कवचम्
सम्पूर्णम्

Baglamukhi Kavach In English

Dhyāna

sauvarṇāsanasaṃsthitāṃ trinayanāṃ pītāśukollāsinīm
hemābhāṃgaruciṃ śaśāṃkamukuṭāṃ saccampakasragyutām
hastairmudagara pāśavajrarasanāḥ saṃbibhratīṃ bhūṣaṇaiḥ
vyāptāgīṃ bagalāmukhīṃ trijagatāṃ saṃstambhinīṃ cintayet

viniyogaḥ

om asya śrībagalāmukhībrahmāstramantrakavacasya bhairava ṛṣiḥ, virāṭ chandaḥ śrībagalāmukhī devatā, klīṃ bījam, aiṃ śaktiḥ, śrīṃ kīlakaṃ, mama parasya ca manobhilāṣiteṣṭakāryasiddhaye viniyogaḥ

nyāsa

śirasi bhairava ṛṣaye namaḥ

mukhe virāṭa chandase namaḥ

hṛdi bagalāmukhīdevatāyai namaḥ

guhye klīṃ bījāya namaḥ

pādayo aiṃ śaktaye namaḥ

sarvāṃge śrīṃ kīlakāya namaḥ

om hrāṃ aṃguṣṭhābhyāṃ namaḥ

om hrīṃ tarjanībhyāṃ namaḥ

om hrūṃ madhyamābhyāṃ namaḥ

om hraiṃ anāmikābhyāṃ namaḥ

om hrauṃ kaniṣṭhikābhyāṃ namaḥ

om hraḥ karatalakarapṛṣṭhābhyāṃ namaḥ

om hrāṃ hṛdayāya namaḥ

om hrīṃ śirase svāhā

om hrūṃ śikhāyai vaṣaṭ

om hraiṃ kavacāya huma

om hrauṃ netratrayāya vauṣaṭ

om hraḥ astrāya phaṭ

mantroddhāraḥ

om hrīṃ aiṃ śrīṃ klīṃ śrībagalānane mama ripūn nāśaya nāśaya māmaiśvaryāṇi dehi dehi, śīghraṃ manovāñchitaṃ kāryaṃ sādhaya sādhaya hrīṃ svāhā.

kavaca

śiro me pātu om hrīṃ aiṃ śrīṃ klīṃ pātu lalāṭakam ।
sambodhanapadaṃ pātu netre śrī bagalānane ॥1॥
śrutau mam ripuṃ pātu nāsikāṃ nāśayadvayam ।
pātu gaṇḍau sadā māmaiśvaryāṇyantaṃ tu mastakam ॥2॥
dehi dvandvaṃ sadā jihavāṃ pātu śīghraṃ vaco mama ।
kaṇṭhadeśaṃ manaḥ pātu vāñchitaṃ bāhumūlakam ॥3॥
kāryaṃ sādhayadvandvaṃ tu karau pātu sadā mama ।
māyāyuktā yathā svāhā hṛdayaṃ pātu sarvadā ॥4॥
aṣṭādhika-catvāriṃśa-daṇḍādhayā bagalāmukhī ।
rakṣāṃ karotu sarvatra gṛheऽraṇye sadā mama ॥5॥
brahmāstrākhyo manuḥ pātu sarvāṃge sarvasandhiṣu ।
mantrarājaḥ sadā rakṣāṃ karotu mama sarvadā ॥6॥
om hrīṃ pātu nābhideśaṃ kaṭiṃ me bagalā-avatu ।
mukhi-varṇadvayaṃ pātu ligaṃ me muṣka-yugmakam ॥7॥
jānunī sarva-duṣṭānāṃ pātu me varṇa-pañcakam ।
vācaṃ mukhaṃ tathā pādaṃ ṣaḍvarṇāḥ parameśvarī ॥8॥
jaṃghāyugme sadāpātu bagalā ripumohinī ।
stambhayeti padaṃ pṛṣṭhaṃ pātu varṇatraya mama ॥9॥
jihavā-varṇadvayaṃ pātu gulphau me kīlayeti ca ।

pādordhvaṃ sarvadā pātu buddhiṃ pādatale mama ॥10॥

vināśayapadaṃ pātu pādāṃgurlyonakhāni me ।

hrīṃ bījaṃ sarvadā pātu buddhindriyavacāṃsi me ॥11॥

sarvāgaṃ praṇavaḥ pātu svāhā romāṇi me-avatu ।

brāhmī pūrvadale pātu cāgneyyāṃ viṣṇuvallabhā ॥12॥

māheśī dakṣiṇe pātu cāmuṇḍā rākṣase-avatu ।

kaumārī paścime pātu vāyavye cāparājitā ॥13॥

vārāhī ca uttare pātu nārasiṃhī śive-avatu ।

ūrdhvaṃ pātu mahālakṣmīḥ pātāle śāradā-avatu ॥14॥

ityaṣṭau śaktayaḥ pāntu sāyudhāśca savāhanāḥ ।

rājadvāre mahādurge pātu māṃ gaṇanāyakaḥ ॥15॥

śmaśāne jalamadhye ca bhairavaśca sadā-avatu ।

dvibhujā raktavasanāḥ sarvābharaṇabhūṣitāḥ ॥16॥

yoginyaḥ sarvadā pāntu mahāraṇye sadā mama ।

phalaśruti

iti te kathitaṃ devi kavacaṃ paramādbhutam ॥17॥

śrīviśvavijayaṃ nāma kīrtiśrīvijayapradām ।

aputro labhate putraṃ dhīraṃ śūraṃ śatāyuṣam ॥18॥

nirdhano dhanamāpnoti kavacāsyāsya pāṭhataḥ ।

japitvā mantrarājaṃ tu dhyātvā śrī bagalāmukhīm ॥19॥

paṭhedidaṃ hi kavacaṃ niśāyāṃ niyamāt tu yaḥ ।

yad yat kāmayate kāmaṃ sādhyāsādhye mahītale ॥20॥

tat tat kāmamavāpnoti saptarātreṇa śaṃkari ।

guruṃ dhyātvā surāṃ pītvā rātro śaktisamanvitaḥ ॥21॥

kavacaṃ yaḥ paṭhed devi tasyāsādhyaṃ na kiñcana ।
yaṃ dhyātvā prajapenmantraṃ sahastraṃ kavacaṃ paṭhet ॥22॥
trirātreṇa vaśaṃ yāti mṛtyoḥ tannātra saṃśayaḥ ।
likhitvā pratimāṃ śatroḥ satālena haridrayā ॥23॥
likhitvā hṛdi tannāma taṃ dhyātvā prajapen manum ।
ekaviṃśadadinaṃ yāvat pratyahaṃ ca sahastrakam ॥24॥
japatvā paṭhet tu kavacaṃ caturviṃśativārakam ।
saṃstambhaṃ jāyate śatrornātra kāryā vicāraṇ ॥25॥
vivāde vijayaṃ tasya saṃgrāme jayamāpnuyāt ।
śmaśāne ca bhayaṃ nāsti kavacasya prabhāvataḥ ॥26॥
navanītaṃ cābhimantraya strīṇāṃ dadyānmaheśrvari ।
vandhyāyāṃ jāyate putro vidyābalasamanvitaḥ ॥27॥
śmaśānāṃgāramādāya bhaume rātrau śanāvatha ।
pādodakena spṛṣṭvā ca likhet lohaśalākayā ॥28॥
bhūmau śatroḥ svarupaṃ ca hṛdi nāma samālikhet ।
hastaṃ taddhṛdaye datvā kavacaṃ tithivārakam ॥29॥
dhyātvā japen mantrarājaṃ navarātraṃ prayatnataḥ ।
mriyate jvaradāhena daśameṃऽhani na saṃśayaḥ ॥30॥
bhūrjapatreṣvidaṃ stotramaṣṭagandhena saṃlikhet ।
dhārayed dakṣiṇe bāhau nārī vāmabhuje tathā ॥31॥
saṃgrāme jayamapnoti nārī putravatī bhavet ।
sampūjya kavacaṃ nityaṃ pūjāyāḥ phalamālabhet ॥32॥
brahmāstrādīni śastrāṇi naiva kṛntanti taṃ janam ।
vṛhaspatisamo vāpi vibhave dhanadopamaḥ ॥33॥

kāmatulyaśca nārīṇāṃ śatrūṇāṃ ca yamopamaḥ ı

kavitālaharī tasya bhaved gaṃgāpravāhavat ıı34ıı

gadyapadyamayī vāṇī bhaved devī prasādataḥ ı

ekādaśaśataṃ yāvat puraścaraṇamucyate ıı35ıı

puraścaryāvihīnaṃ tu na cedaṃ phaladāyakam ı

na deyaṃ paraśiṣyebhyo duṣṭebhyaśca viśeṣataḥ ıı36ıı

deyaṃ śiṣyāya bhaktāya pañcatvaṃ cānyathā-aapnuyāt ı

idaṃ kavacamajñātvā bhajed yo bagalāmukhīm ıı37ıı

śatakoṭiṃ japitvā tu tasya siddhirna jāyate ı

dārāḍhayo manujoasya lakṣajapataḥ prāpnoti siddhiṃ parāṃ ıı38ıı

vidyāṃ śrīvijayaṃ tathā suniyataṃ dhīraṃ ca vīraṃ varam ı

brahmāstrākhyamanuṃ vilikhya nitarāṃ bhūrje-aṣṭagandhena vai 39

dhṛtvā rājapuraṃ vrajanti khalu te dāsoasti teṣāṃ nṛpaḥ

iti śrīviśvasāroddhāratantre pārvatīśvarasaṃvāde

bagalāmukhī kavacam

sampūrṇam

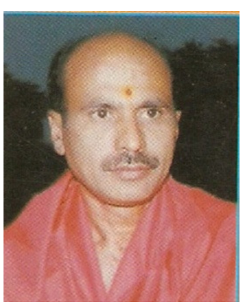

Shri Yogeshwaranand Ji

Mb :- **+919917325788, +919675778193**
Email :- **shaktisadhna@yahoo.com**
Web : **www.anusthanokarehasya.com**
www.baglamukhi.info

My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my

dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi

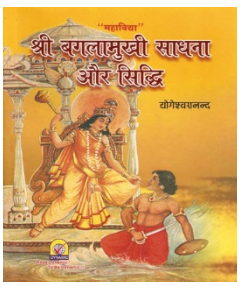

2. **Mantra Sadhana**

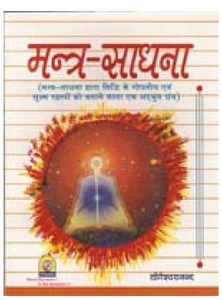

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

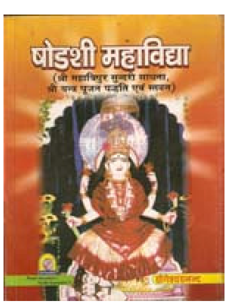

Shiv Sadhana Vidhi on Shivratri 12 August 2015

शिव साधना विधि श्रावणी शिवरात्री १२ अगस्त २०१५

Sumit Girdharwal Ji

9540674788, 9410030994

sumitgirdharwal@yahoo.com

www.baglamukhi.info

www.yogeshwaranand.org

शिव की महिमा अनंत है। उनके रूप, रंग और गुण अनन्य हैं। समस्त सृष्टि शिवमयी है। सृष्टि से पूर्व शिव हैं और सृष्टि के विनाश के बाद केवल शिव ही शेष रहते हैं। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की

रचना की, परंतु जब सृष्टि का विस्तार संभव न हुआ तब ब्रह्मा ने शिव का ध्यान किया और घोर तपस्या की। शिव अर्द्धनारीश्वर रूप में प्रकट हुए। उन्होंने अपने शरीर के अर्द्धभागसे शिवा (शक्ति या देवी) को अलग कर दिया। इस प्रकार सृष्टि की रचना के लिए शिव दो भागों में विभक्त हो गए, क्योंकि दो के बिना सृष्टि की रचना असंभव है। शिव पांच तरह के कार्य करते हैं जो ज्ञानमय हैं। सृष्टि की रचना करना, सृष्टि का भरण-पोषण करना, सृष्टि का विनाश करना, सृष्टि में परिवर्तनशीलतारखना और सृष्टि से मुक्ति प्रदान करना। सृष्टि के आरंभ और विनाश के समय रुद्र ही शेष रहते हैं। कहा जाता है कि सृष्टि के आदि में महाशिवरात्रि को मध्य रात्रि में शिव का ब्रह्म से रुद्र रूप में अवतरण हुआ, इसी दिन प्रलय के समय प्रदोष स्थिति में शिव ने ताण्डव नृत्य करते हुए संपूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से नष्ट कर दिया। इसीलिए महाशिवरात्रि अथवा काल रात्रि को पर्व के रूप में मनाने की प्रथा का प्रचलन है।

शिव को सहस्त्रमुखी यानी हजार मुंह वाला भी कहा गया है, लेकिन प्रमुखतया शिव पंचमुखी हैं। इन्हीं पांचों मुखों के जरिए शिव संसार को चलाते हैं। शिव की प्रिय संख्या है पांच। शिव मध्यमार्गी हैं। यानी न देवों के, न असुरों के। वह बीच के हैं, जो चाहे, वह प्राप्त कर ले। शून्यका विस्फोट हुआ, तो उससे नौ संख्याएं निकली-एक से नौ तक। पांच सबसे बीच की संख्या है। शिव पंचतत्व के देव हैं। इंद्रियां भी पांच होती हैं और शिव इंद्रियों के भी स्वामी हैं। शिव का प्रिय मंत्र है-नमः शिवाय।

इसमें भी पांच ही अक्षर हैं, इसीलिए इसे 'पंचाक्षर मंत्र' कहा जाता है। यदि इसमें ॐ भी जोड़ दिया जाये तो यह षडाक्षरी मंत्र ॐ नमः शिवाय बन जाता है जो और भी अधिक प्रभावशाली है।

१२ अगस्त २०१५ को श्रावणी शिवरात्री है। इस दिन भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र नमः शिवाय अथवा ॐ नमः शिवाय का रूद्राक्ष की माला पर अथवा मानसिक रूप से जप करना चाहिए। जितना अधिक आप का जप होगा उतनी अधिक आपके ऊपर भगवान शिव की कृपा होगी।

....

ॐ नमः शिवाय

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

卐 Shiva Shadaakshari Mantra Sadhana Evam Siddhi 卐

卐 भगवान शिव षडाक्षरी मन्त्र साधना एवं सिद्धि 卐

Sumit Girdharwal

9540674788, 9410030994

sumitgirdharwal@yahoo.com

www.baglamukhi.net

www.yogeshwaranand.org

सम्पुर्ण जगत में भगवान शिव के समान कोई नही है उनकी उपासना से बढ़कर कोई उपसाना नही है एवं उनके मंत्रो से बढ़कर कोई मंत्र नही है मनुष्य योनि प्राप्त करना तभी सफल है जब यह भगवान शिव की सेवा एवं भक्ति में समर्पित हो जाये । भगवान शिव को प्रसन्न करना ही मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए । जिस व्यक्ति ने इस जन्म में भगवान शिव को प्रसन्न कर लिया, उसके लिए करने को कुछ शेष नही रह जाता ।

वैसे तो भगवान शिव को प्रसन्न करने की कोई विधि नही है क्योंकि वो अपने भक्तों पर कब और कैसे प्रसन्न हो जायें ये कोई नही जानता फिर भी गुरूओं के मुख से जो कुछ भी प्राप्त हुआ उसके अनुसार व्यक्ति को साधना करनी चाहिए ।

भगवान शिव का षडाक्षरी मंत्र सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वशक्तिशाली मंत्र है इस मंत्र के जप से आध्यात्मिक विकास होता है एवं अन्त में मोक्ष प्राप्ति होती है इस संसार के सभी ऐश्वर्य एवं भोग शिव साधक के आगे नतमस्तक रहते है कोई दुख अथवा कष्ट भगवान शिव के साधक को नही छू सकता । शिव योगी सदैव निरोगी रहता है एवं १०० वर्ष की आयु पूर्ण कर मोक्ष प्राप्त करता है

भगवान शिव के षडाक्षरी मन्त्र ' ॐ नमः शिवाय ' की सम्पूर्ण विधि साधको के हितार्थ यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ -

आसन पर बैठकर सर्वप्रथम अपने गुरूदेव का ध्यान एवं पूजन करें, उसके पश्चात गणेश जी का ध्यान एवं पूजन करें । यह पूजन आप मानसिक रूप से भी करे सकते हैं इसके पश्चात भगवान शिव का ध्यान करें एवं धूप, दीप फल फूल आदि से पूजन करें । इसके पश्चात संकल्पानुसार जप करें।

इस मंत्र का 1,25,000 जप रूद्राक्ष की माला से करना है, जिसे आप 11,14 अथवा 21 दिन में कर सकते है इसके पश्चात दशांश होम, तर्पण, मार्जन करना चाहिए एवं ११ ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए ।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

इस विधि से आपको जीवन भर अनुष्ठान करने हैं, एक अनुष्ठान करके रूक नही जाना है, लगातार करते रहना है आप देखना जीवन में कैसे आपको आनन्द मिलता है।
जो लोग अनुष्ठान करने में सक्षम नही हैं वो नियमित रूप से 51 माला इस मंत्र की करें ।

शिव के साथ शक्ति की एवं शक्ति के साथ शिव की उपासना अवश्य होती है इसलिए अपने गुरूदेव से शक्ति मंत्र भी अवश्य प्राप्त करें एवं उसका यथासम्भव जप करें ।

मन्त्र – ॐ नमः शिवाय

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रवतंम् ।
रत्नाव्कल्पोज्जवलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणै व्याघ्रकृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

सीधे हाथ में जल लेकर विनियोग करें –

विनियोग – अस्य मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्ति छन्द, ईशान देवता, ॐ बीजाय, नमः शक्तये, शिवायेति कीलकाय, सदाशिव प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ वामदेवऋषये नमः शिरसि।

पंक्ति छन्दसे नमः मुखे ।

ईशान देवतायै नमः ह्रदि।

ॐ बीजाय नमः गुह्ये।

नमः शक्तये नमः पदयोः।

शिवायेति कीलकाय नमः नाभौ।

विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे

षडङ्गन्यास

ॐ ॐ अगुंष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ मं मध्यामाभ्यां नमः।`

ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ यं करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास

ॐ ॐ ह्रदयाय नमः

ॐ नं शिरसे स्वाहा

ॐ मं शिखायै वषट्

ॐ शिं कवचाय हुम्।

ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट।

ॐ यं अस्त्राय फट्।

आज के युग में मनुष्य ऐसी साधनाओं की खोज में रहता है जो उसे तुरन्त फल प्रदान करें वह महामानव बनना चाहता है जिसके इशारे पर पूरा संसार चले, ऐसी सिद्धियां प्राप्त करना चाहता है जिनसे वह जब चाहे जिसको चाहे भस्म कर दे, जिसको चाहे वश में कर ले, सम्पूर्ण भविष्य का ज्ञान उसे हो जाये और पूरा संसार उसके आगे नतमस्तक रहे । ऐसी सिद्धियां पाने के लिए वो इधर उधर भटकता है। नये-नये गुरूओ के पास जाता है, नयी-नयी पुस्तकें खरीदता है। एक दो महीना नये मंत्र का जप करता है और जब कुछ हासिल नही होता तो फिर किसी नयी साधना को करना प्रारम्भ कर देता है। इस तरह कई वर्ष बीत जाते हैं और कुछ हाथ नही आता ।

इस संसार के कुछ नियम होते हैं और उन्ही नियमों के तहत आपको फल प्राप्त होता है, केवल आपके चाहने से कुछ नही होता । सभी सिद्धियां भगवद कृपा से प्राप्त होती हैं इनके लिए आपको अलग से कुछ करने की आवश्यकता नही है। जो व्यक्ति सिद्धियों के पीछे भागता है उसे वो कभी प्राप्त नही होती और जिसका लक्ष्य परमात्म प्राप्ति है सभी सिद्धियां उसके आगे नतमस्तक रहती हैं। यहां मेरा उद्देश्य आपको समझाना है कि कोई भी सिद्धि भगवद कृपा से ही मिलती है। यदि यह मिलनी होगी तो आपको मिलकर ही रहेगी इसके लिए दर दर भटकने की और तुच्छ साधनाओं को करने की कोई आवश्यकता नही है। उच्च कोटि की निष्काम साधना से सर्वप्रथम आपके जो पाप कर्म हैं उनका नाश होता है और आप जन्म-मरण के बंधनो से मुक्त हो जाते हैं सब कुछ आपको बिना चाहे ही मिल जायेगा । इसलिए मेरा आपको परामर्श है कि आप केवल उच्च कोटि की निष्काम उपासना ही करें जैसे शिव साधना एवं उनके विभिन्न अवतार, शक्ति

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

उपासना (दस महाविद्या, दुर्गा, काली, प्रत्यगिंरा, गायत्री आदि), भगवान विष्णु एवं उनके विभिन्न अवतार ।

Books written by Shri Yogeshwaranand Ji

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

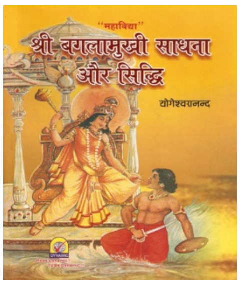

2. **Mantra Sadhana**

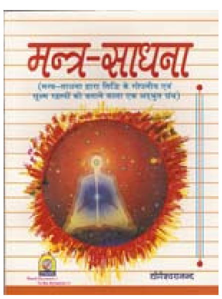

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

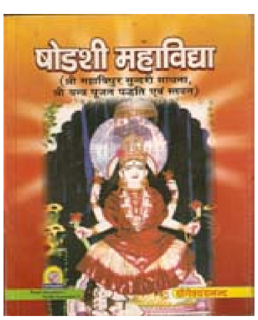

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com & sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

Requirement

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks

Pashupatastra Mantra Sadhna Evam Siddhi
पशुपतास्त्र मंत्र साधना एवं सिद्धि

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.net
www.yogeshwaranand.org

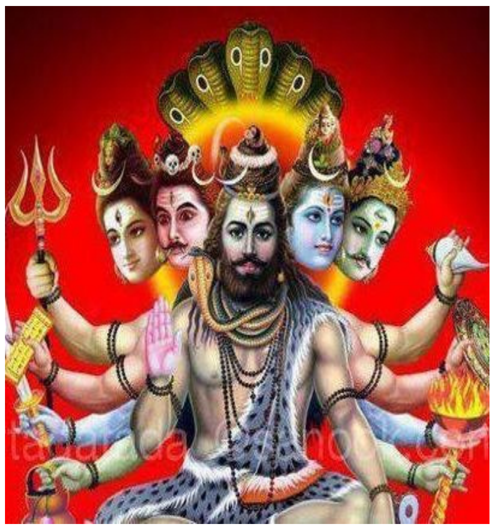

ब्रह्मांड में तीन अस्त्र सबसे बड़े हैं - पशुपतास्त्र, नारायणास्त्र एवं ब्रह्मास्त्र इनमें से यदि कोई एक भी अस्त्र मनुष्य को सिद्ध हो जाये तो उस व्यक्ति के सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं। लेकिन इनकी सिद्धि प्राप्त करना इतना सरल नही है। यदि आपमें कड़ी साधना करने का साहस नही है एवं धैर्य नही है तो ये साधना आपके लिए नही है।

मंत्र - ऊँ श्लीं पशु हुं फट्।

विनियोगः- ऊँ अस्य मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छंदः, पशुपतास्त्ररूप पशुपति देवता, सर्वत्र यशोविजय लाभार्थे जपे विनियोगः।

षडङ्गन्यासः -

ऊँ हुं फट् हृदयाय नमः।
श्लीं हुं फट् शिरसे स्वाहा।
पं हुं फट् शिखायै वषट्।
शुं हुं फट् कवचाय हुं।
हुं हुं फट् नेत्रत्रयाय वौषट्।
फट् हुं फट् अस्त्राय फट्।

ध्यान

मध्याह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासोज्ज्वलम्
त्र्यक्षं पन्नगभूषणं शिखिशिखाश्मश्रु-स्फुरन्मूर्द्धजम् ।
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तादधानं विभुम्
दंष्ट्रभीम चतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्ररूपं स्मरेत् ।।

विधि : सर्वप्रथम अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा प्राप्त करें। इस मंत्र का पुरश्चरण ६ लाख जप करने से होता है। उसका दशांश होम, उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन एवं उसका दशांश ब्राह्मण भोज होता

है।

इस मंत्र के साथ में पाशुपतास्त्र स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करना चाहिए। इस पाशुपत-मंत्र की एक बार आवृति करने से ही यह मनुष्य सम्पूर्ण विघ्नों का नाश कर सकता है, सौ आवृतियों से समस्त उत्पातों को नष्ट कर सकता है।

इस मंत्र द्वारा घी और गुग्गुल के होम से मनुष्य असाध्य कार्यों को भी सिद्ध कर सकता है इस पाशुपतास्त्र-मंत्र के पाठमात्र से समस्त क्लेशो की शांति हो जाती है।

।। पाशुपतास्त्र स्तोत्रम्।।

ॐ नमो भगवते महापाशुपतायातुलबलवीर्यपराक्रमाय त्रिपञ्चनयनाय नानारूपाय नानाप्रहरणोद्यताय सर्वाङ्गरक्ताय भिन्नाञ्जनचयप्रख्याय श्मशान वेतालप्रियाय सर्वविघ्ननिकृन्तन-रताय सर्वसिद्धिप्रदाय भक्तानुकम्पिने असंख्यवक्त्रभुजपादाय तस्मिन् सिद्धाय वेतालवित्रासिने शाकिनीक्षोभ जनकाय व्याधिनिग्रहकारिणे पापभंजनाय सूर्यसोमाग्निनेत्राय विष्णु-कवचाय खंगवज्रहस्ताय यमदण्डवरुणपाशाय रुद्रशूलाय ज्वलज्जिह्वाय सर्वरोगविद्रावणाय ग्रहनिग्रहकारिणे दुष्टनागक्षय-कारिणे।

ऊं कृष्णपिंगलाय फट्। हूंकारास्त्राय फट्। वज्र-हस्ताय फट्। शक्तये फट्। दण्डाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैर्ऋताय फट्। वरुणाय फट्। वज्राय फट्। ध्वजाय फट्। अंकुशाय फट्। गदायै फट्। कुबेराय फट्।

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्। चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्। ईशानाय फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुण्डाय फट। मुण्डास्त्राय फट्। कंकालास्त्राय फट्। पिच्छिकास्त्राय फट्। क्षुरिकास्त्राय फट्। ब्रह्मास्त्राय फट्। शक्त्यस्त्राय फट्। गणास्त्राय फट्। सिद्धास्त्राय फट्। पिलिपिच्छास्त्राय फट्। गन्धर्वास्त्राय फट्। पूर्वास्त्रायै फट्। दक्षिणास्त्राय फट। वामास्त्राय फट्। पश्चिमास्त्राय फट्। मंत्रास्त्राय फट्। शाकिन्यास्त्राय फट्। योगिन्यस्त्राय फट्। दण्डास्त्राय फट्। महादण्डास्त्राय फट्। नमोअस्त्राय फट्। सद्योजातास्त्राय फट्। हृदयास्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। गरुडास्त्राय फट्। राक्षसास्त्राय फट्। दानवास्त्राय फट्। क्षौ नरसिंहास्त्राय फट्। त्वष्ट्रस्त्राय फट्। सर्वास्त्राय फट्। नः फट्। वः फट्। पः फट्। फः फट्। मः फट्। श्रीः फट्। पेः फट्। भुः फट्। भुवः फट्। स्वः फट्। महः फट्। जनः फट्। तपः फट्। सत्यं फट्। सर्वलोक फट्। सर्वपाताल फट्। सर्वतत्व फट्। सर्वप्राण फट्। सर्वनाडी फट्। सर्वकारण फट्। सर्वदेव फट्। ह्रीं फट्। श्रीं फट्। डूं फट्। स्त्रुं फट्। स्वां फट्। लां फट्। वैराग्याय फट्। मायास्त्राय फट्। कामास्त्राय फट्। क्षेत्रपालास्त्राय फट्। हुंकरास्त्राय फट्। भास्करास्त्राय फट्। चन्द्रास्त्राय फट्। विघ्नेश्वरास्त्राय फट्। गौः गां फट्। स्त्रों स्त्रौं फट्। हौं हों फट्। भ्रामय भ्रामय फट्। संतापय संतापय फट्। छादय छादय फट्। उन्मूलय उन्मूलय फट्। त्रासय त्रासय फट्। संजीवय संजीवय फट्। विद्रावय विद्रावय फट्। सर्वदुरितं नाशय नाशय फट्।

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

हमारे शास्त्रों में करोड़ो मंत्र हैं लेकिन हर मंत्र आपके लिए सही नही है। शिष्य के लिए कौन सा मंत्र सही है इसका निर्णय केवल गुरू ही कर सकता है। इसलिए आप केवल अपने आप को गुरू को समर्पित कर दीजिए, इसके बाद गुरू स्वयं आपको सही राह दिखायेगा।

यदि आपको हमारे द्वारा लिखे गये लेख पंसद है तो कृपया हमें अपनी ईमेल आईडी अवश्य भेजें । उसके पश्चात हमारे द्वारा लिखे सभी लेख हम आपको सीधे आपकी ईमेल पर ही भेज देंगें। हमारा ईमेल है - sumitgirdharwal@yahoo.com

People, who are unable to read the Hindi or Sanskrit & want to read our articles, please send your request for the English translation with the article name & its link to sumitgirdharwal@yahoo.com. Based on the number of request for the particular article we will try to translate it into English as soon as possible.

For Astrology, Mantra Diksha & Puja contact us.

Some of our books -

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

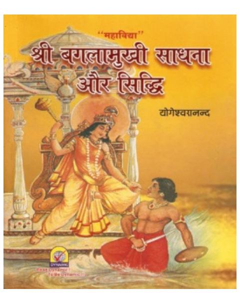

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

2. **Mantra Sadhana**

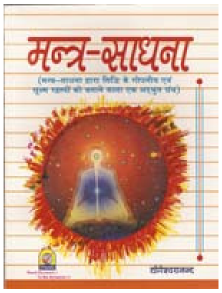

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

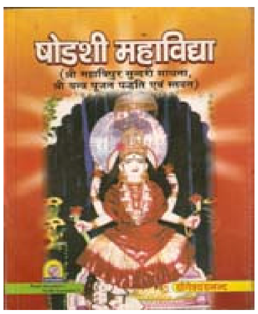

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

श्री बगलामुखी साधना रहस्य का प्रकाशन जल्द ही किया जा रहा है। यह पुस्तक लगभग ७०० पृष्ठ की है जिसमें मां पीताम्बरा की साधना की पूर्ण विधि दी गयी है। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए Rs 680 नीचे लिखे अकाउण्ट में जमा करायें

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094

Support & Feedback

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content regarding Das Mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. We need your support to complete this task

Requirement -

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Font chanakya) or Microsoft Office (Font Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

Sumit Girdharwal Ji
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com,
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

ॐ Aghorastra Mantra Sadhna Vidhi in Hindi & Sanskrit ॐ

ॐ अघोरास्त्र मन्त्र एवं प्रयोग ॐ

Sumit Girdharwal
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.net
www.yogeshwaranand.org

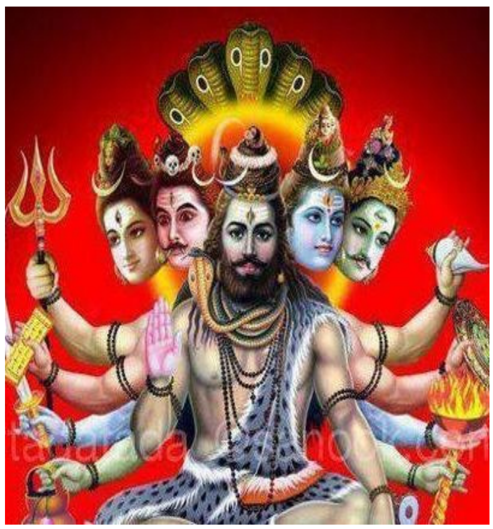

अघोरास्त्र मंत्र के स्मरण मात्र से मनुष्यों के सारे उपद्रव नष्ट हो जाते हैं अघोरास्त्र मंत्र का जप महामारी, राजकीय उपद्रव, प्रेत बाधा, शत्रु बाधा, ग्रह दोष, असामयिक गर्भपात शान्ति हेतु किया जाता है।

महादेव स्कन्द जी से कहते हैं – अब मैं समस्त उत्पातों का नाश करने वाली अस्त्र शान्ति का वर्णन करूगाँ। यह शान्ति ग्रहरोग आदि को

शान्त करने वाली तथा महामारी एवं शत्रु का मर्दन करने वाली है विघ्न कारक गणों के द्वारा उत्पादित उत्पात को भी शान्त करती है मनुष्य अघोरास्त्र का जप करे। एक लाख जप करने से ग्रहबाधा आदि का निवारण होता है और तिल से दशांश होम कर दिया जाये तो उत्पातों का नाश होता है। एक लाख जप-होम से दिव्य उत्पात का तथा आधे लक्ष जप-होम से आकाशज उत्पात का नाश होता है घी की एक लाख आहुति देने से भूमिज उत्पात के निवारण में सफलता प्राप्त होती है घृत मिश्रित गुग्गुल के होम से सम्पूर्ण उत्पात आदि का शमन होता है दूर्वा, अक्षत तथा घी की आहुति देने से सारे रोग दूर होते हैं केवल घी की एक सहस्र आहुति से बुरे स्वप्न नष्ट हो जाते हैं, इसमें संशय नही है वही आहुति यदि दस हजार की संख्या में दी जाय तो ग्रहदोष का शमन होता है घृत मिश्रित जौं की दस हजार आहुतियों से विनायक जनित पीड़ा का निवारण होता है दस हजार घी की आहुतियों से तथा गुग्गुल की भी दस हजार आहुतियों से भूत-वेताल आदि की शान्ति होती है वृक्ष आंधी आदि से स्वतः उखड़कर गिर जाय, घर में सर्प का कंकाल हो तथा वन में प्रवेश करना पड़े तो दूर्वा, घी और अक्षत के होम से विघ्न की शान्ति होती है उल्कापात या भूकम्प हो तो तिल और घी से होम करने से कल्याण होता है वृक्षों से रक्त बहे, असमय में फल-फूल लगें, राष्ट्रभंग हो, मारणकर्म हो, जब मनुष्य-पशु आदि के लिए महामारी आ जाय तो तिल मिश्रित घी से अर्धलक्ष आहुति देनी चाहिये ।

जहाँ असमय में गर्भपात हो या जहाँ बालक जन्म लेते ही मर जाता हो तथा जिस घर में विकृत अंग वाले शिशु उत्पन्न होते हों तथा जहाँ समय पूर्ण हाने से पूर्व ही बालक का जन्म होता हो, वहाँ इन सब दोषों के

शमन के लिए दस हजार आहुतियां देनी चाहिये। सिद्धि साधन में तिल मिश्रित घी से एक लाख हवन किया जाय तो वह उत्तम है, मध्यम सिद्धि के साधन में अर्धलक्ष और अधम सिद्धि के लिए पचीस हजार आहुति देनी चाहिये। जैसा जप हो , उसके अनुसार ही होम होना चाहिये। इससे संग्राम में विजय प्राप्त होती है। न्यासपूर्वक तेजस्वी पंचमुख का ध्यान करके 'अघोरास्त्र' का जप करना चाहिये।

विधि - सर्वप्रथम अपने गुरूदेव से इस मंत्र की दीक्षा लें। जो व्यक्ति बिना गुरूमुख से मंत्र लिए केवल पुस्तकों से पढकर मंत्र जप करता है वह घोर नरक का अधिकारी होता है एवं करोड़ो जप करने पश्चात भी उसे सिद्धि नही मिलती। यह विद्या बहुत ही उग्र है इसलिए योग्य गुरू के सान्निध्य में ही प्रारम्भ करें ।

प्रारम्भिक पूजा करने के पश्चात् भगवान शिव के पंचमुखो का निम्नलिखित मंत्रो से पूजन एवं ध्यान करना चाहिये।

ईशान (ईशान दिशा)

यह क्रीड़ा का मुख है। जितने भी मनोरंजन, खेल, विज्ञान आदि हैं, ये सभी शिव के इसी मुख द्वारा संचालित होते हैं।

पूजन मंत्र : ॐ ईशानाय नमः । ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रृह्माधिपतिर्ब्रह्मणोअधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

तत्पुरूष (पूर्व दिशा)

यह मुख पूर्व दिशा की ओर है। यह तपस्या का मुख है। साधना, पढ़ाई-लिखाई, इच्छा व लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रत्येक कार्य इसी मुख से संचालित होता है।

पूजन मंत्र : ॐ तत्पुरूषाय नमः । ॐ तत्पुरूषाय विदमूहे महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात् ।

अघोर (दक्षिण दिशा)

यह शिव का रौद्रमुख है। संसार में जो युद्ध, आपदाएं, मृत्यु आती हैं, वो सभी शिव के इसी मुख से संचालित होता है। यह न्याय भी करता है और पाप का दंड भी देता है। आपदाशांति के लिए अघोर-उपासना इसीलिए की जाती है। यह शिव का मध्यमुख है।

पूजन मंत्र : ॐ अघोराय नमः। ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रूद्ररूपेभ्यः ।

वामदेव (पश्चिम दिशा)

यह अंहकार का रूप है। हमारे अहंकार, गर्व, प्रेम, मोह, आसक्ति आदि इसी मुख के कारण इस संसार में दिखते हैं।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

पूजन मंत्र : ॐ वामदेवाय नमः। ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बालाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ।

सद्योजात (उत्तर दिशा)

यह ज्ञान का मुख है। यह शिव का अतिशालीन रूप है। शिव के इसी रूप की सबसे ज्यादा आराधना होती है।

पूजन मंत्र : ॐ सद्योजाताय नमः। ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमो भवे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय ।

सीधे हाथ में जल लेकर विनयोग करें -

विनियोग : ॐ अस्य श्री अघोरास्त्र मंत्रस्य, अघोर ऋषिः, त्रिष्टुप् छंदः अघोर रुद्रदेवता, ह ल बीजं, स्वराः शक्तिं। सर्वोपद्रव शमनार्थे जपे विनियोगः।

करन्यासः
ह्रीं स्फुर स्फुर अंगुष्ठाभ्याम् नमः
प्रस्फुर प्रस्फुर तर्जनीभ्याम् नमः
घोर घोर-तर तनुरूप मध्यमाभ्याम् नमः
चट चट प्रचट प्रचट अनामिकाभ्याम् नमः

कह कह वम वम कनिष्ठिकाभ्याम् नमः
बंध बंध घातय घातय हुँफट् करतलकरपृष्ठाभ्यां

षडङ्गन्यासः-

ह्रीं स्फुर स्फुर हृदयाय नमः
प्रस्फुर प्रस्फुर शिरसे स्वाहा
घोर घोर-तर तनुरूप शिखायै वषट्
चट चट प्रचट प्रचट कवचाय हुँ
कह कह वम वम नेत्रत्रयाय वौषट्
बंध बंध घातय घातय हुँफट् नमःअस्त्राय फट्

न्यास करने के पश्चात् भगवान शिव का ध्यान करें -

ध्यानम्

सजल घनसमाभं भीम दंष्ट्रं   त्रिनेत्रं
भुजगधरमघोरं ह्यरक्त वस्त्राङ्ग रागाम्।
परशु डमरू खडगान् खेटकं वाण चापौ
त्रिशिखि नर कपाले विभ्रतं भावयामि।।
अभिचारे ग्रहध्वंसे कृष्णवर्णो भवेद्विभुः
वश्ये कुसुम्भसङ्काशो मुक्तौ चन्द्रसमप्रभः

जल युक्त बादल के समान जिनके शरीर की कान्ति हैं, जिनकी दंष्ट्रा अत्यन्त

भयानक है जो तीन नेत्रों से युक्त तथा साँपों को धारण करने वाले हैं - ऐसे रक्त वस्त्र एवं रक्त अङ्गराग से भूषित परशु, डमरू, खड्ग, खेटक, बाण, चाप, त्रिशुल तथा नर कपाल को धारण करने वाले अघोर का मैं ध्यान करता हूँ

ये अघोर प्रभु , मारण तथा ग्रहों के विनाश काल में कृष्ण वर्ण और वश्यकार्य में कुसुम्भ के सदृश तथा मुक्ति कार्य में चन्द्रमा के समान रूप धारण करते हैं

शारदा तिलक तन्त्र के अनुसार अघोर मंत्र का एक लक्ष जप करके दशांश होम करें। साधक रात्रि में, अपामार्ग समिध तिल सरसों एवं पायस से अयुत होम या सहस्त्राहुति देवे तो कृत्या व भूतों का नाश होता हैं।

अघोरास्त्र मंत्र के साथ में नियमित रूप से शिव गायत्री एवं शक्ति मंत्र का जप करना चाहिये । उत्तम फल प्राप्ति के लिए प्रतिदिन शिवलिंग पर जल चढाना चाहिये एवं नीलकण्ठ अघोरास्त्र स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।

।। श्रीनीलकण्ठ अघोरास्त्र स्तोत्रं।।

विनियोगः- ॐ अस्य श्री भगवान नीलकण्ठ सदा-शिव-स्तोत्र मंत्रस्य श्री ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टप् छन्दः , श्रीनील-कण्ठ सदाशिवो देवता ब्रह्म बीजं, पार्वती शक्तिः , मम समस्त-पाप-क्षयार्थं क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ मोक्षादि-चतुर्वर्ग-साधनार्थ च श्रीनील-कण्ठ-सदा-शिव-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः -

श्री ब्रह्मा ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे।
श्रीनीलकण्ठ सदाशिव देवतायै नमः हृदि।
ब्रह्म-बीजाय नमः लिङ्गे।
पार्वती-शक्त्यै नमः नाभौ।
मम समस्त पापक्षयार्थ क्षेमस्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्धयर्थं मोक्षादि चतुर्वर्गं साधनार्थं च श्रीनीलकण्ठ सदाशिव प्रसाद सिद्धयर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

।। स्तोत्रम् ।।

ॐ नमो नीलकण्ठाय, श्वेतशरीराय, सर्पालंकारभूषिताय, भुजङ्गपरिकराय, नागयज्ञोपवीताय, अनेकमृत्यु विनाशाय नमः। युग युगान्त कालप्रलय-प्रचण्डाय, प्रज्वाल-मुखाय नमः। दंष्ट्राकराल घोररूपाय हूं हूं फट् स्वाहा। ज्वालामुखाय मंत्र करालाय, प्रचण्डार्क सहस्त्रांशु-चण्डाय नमः। कर्पूर मोद-परिमलाङ्गाय नमः। ॐ ईं ईं नील महानील वज्र वैलक्ष्य मणि-माणिक्य मुकुट भूषणाय, हन-हन-हन-दहन-दहनाय श्रीअघोरास्त्र मूल मंत्र-ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं स्फुर अघोर-रूपाय रथ रथ तंत्र-तंत्र-चट्-चट्-कह-कह-मद-मद-दहन-दाहनाय श्री अघोरास्त्र-मूल-मंत्र-जरा-मरण-भय-हूं-हूं फट्

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

स्वाहा।

अनन्ताघोर-ज्वर-मरण-भव-क्षय-कुष्ठ-व्याधि-विनाशाय, शाकिनी-डाकिनी-ब्रह्मराक्षस-दैत्य-दानव-बन्धनाय, अपस्मार-भूत-बैताल-डाकिनी-शाकिनी-सर्व-ग्रह-विनाशाय, मंत्र-कोटि-प्रकटाय, पर-विद्योच्छेदनाय, हूं हूं फट् स्वाहा।
आत्म-मंत्र संरक्षणाय नमः।
ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रीं नमो भूत-डामरी-ज्वाल-वश-भूतानां-द्वादश-भूतानां त्रयोदश-षोडश-प्रेतानां पञ्च-दश-डाकिनी-शाकिनीनां हन हन। दहन-दार-नाथ! एकाहिक-द्वयाहिक-त्र्याहिक-चातुर्थिक-पञ्चाहिक-व्याघ्र-पादान्त-वातादि-वात-सरिक-कफ-पित्तक-काश-श्वास-श्लेष्मादिकं दह-दह, छिन्धि-छिन्धि, श्रीमहादेव-निर्मित-स्तंभन-मोहन-वश्याकर्षणोच्चाटन-कीलनोद्वेषण-इति षट्-कर्माणि वृत्य हूं हूं फट् स्वाहा।
वात ज्वर, मरण-भय, छिन्न-छिन्न नेह नेह भूतज्वर, प्रेतज्वर, पिशाचज्वर, रात्रिज्वर, शीतज्वर, तापज्वर, बालज्वर, कुमारज्वर, अमितज्वर, दहनज्वर, ब्रह्मज्वर, विष्णुज्वर, रुद्रज्वर, मारीज्वर, प्रवेशज्वर, कामादि-विषम ज्वर, मारी-ज्वर, प्रचण्ड-घराय, प्रमथेश्ववर! शीघ्रं हूं हूं फट् स्वाहा। ऊँ नमो नीलकण्ठाय, दक्षज्वर-ध्वंसनाय, श्रीनीलकण्ठाय नमः।

फलश्रुति

सप्तवारं पठेत् स्तोत्रं, मनसा चिन्तितं जपेत्।
तत्सर्वं सफलं प्राप्तं, शिवलोकं स गच्छति।।

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

Books written by Shri Yogeshwaranand Ji

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi

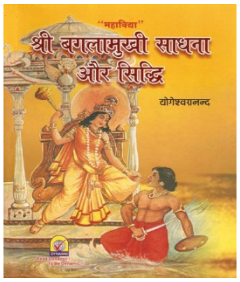

2. **Mantra Sadhana**

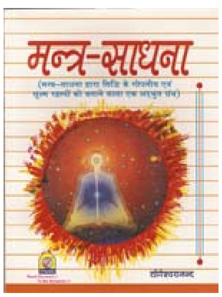

3. **Shodashi Mahavidya** (Tripursundari Sadhana)

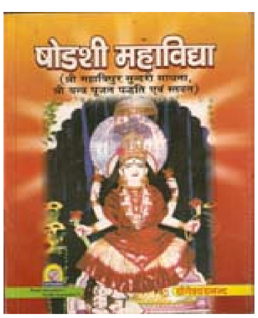

4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C
Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298
IFSC Code – UTIB0001094
After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com & sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

Requirement

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints

and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks